उोम्

॥ श्रीजिनेंद्रायनमः ॥ अहिंसापर्मोधर्मः ॥

ए महा उत्तम पुस्तक गुणोका भंडारहे ज्ञानरूपी नेत्रोंका कारहे ए पुस्तक लिखतका मिलना अति कठनथा ए कठनताई दूरकर्णे के वास्ते और स्वधर्मी जनाके हित अर्थ श्रावक नंदलाल ॥ वृजवलभ दासने छपवा कर प्रसिध कीयाहे अगर कोई लग मात्र की गलती छपने के समे रहगई हो तो पंडत जनकृपा करके सुधारलहे और जो भव्यजीव इसको पढेंगे पढावेंगे अर्थ भमार्थको समझेंगे सो संसार सागरसे सीघ्र पारपावें गे और इस पुस्तकको जत्न सहत सुप पत्रो वांध कर वाचना चाहीए ॥ और दीपकजलाणके वाचनेकी आग्यानहीहे सुभं भुयात ॥ दा० श्रावक नंदलाल व्रजवलभदास ॥

॥ श्रीप्रवचनसंग्रह पुस्तककी अनुक्रमणिका ॥

प्रथम वार छपा एक पुस्तककी कीमत १।) रुपैया डाक खरच अलाहदा ॥ यह पुस्तकसन १८६७ के २५ के ऐकट मुजब रिजीष्टरी प्रसिध करताने अपने नामकी सरकारे करयायलई हे अब किसी और को छपवानेकी अजाजत नहीं हे ॥ मिती आशु दिन १५ समत् १९५३ सन १८९६ ता० २१ सितंबर

☞ पुस्तक मिलनेका ठिकाना दुकान कृपाशाह ॥ नंदलाल भावडा बजार बडा सहर स्यालकोट देस पंजाब ।

॥ अथ श्री साधगुनमालाप्रारंभते ॥

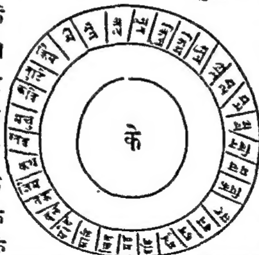
उँ ॥ श्री वीतरागायनमः ॥

अथ साधुगुणमाला लिप्यते ॥ सर्वगुरुवर्ण दोहरा ॥

श्री त्रैलोका धीसको वंदो ध्यावो ध्यांन । यासेवासाता सुधी पावो नीकोज्ञान ॥ १ ॥ द्वादशस्वरअनुक्रमवर्णनं दोहरा ॥ अलपआदि इस ईसको उत्तमऊचोएक । ऐसो ओडक और नहि अंतनअ:जगटेक ॥ २ ॥ यमकबंधसर्वलघुवर्ण दोहरा ॥ मुनि मुनि पति वरनन करन शिव शिव मगशिवकरण । जस जस ससियर दिपतजग जय जय जिन जन सरण ॥ ३ ॥ सर्वलघुदो० करत सुजस सुरअसुर अहि उड गण नरगहि सरण । जिहसमरण समकत विमल प्रणमत हरजसचरण ॥ ४ ॥ दोहरा ॥ वंदो श्रीसी मंदरं स्वामीसदाकृपाल । श्रुतिदेवीको वंदकेरचो साधुगुणमाल ॥ ५ ॥ जिनवर भापत जैनमत जत्नमूलजयवंत । जतीधर्म जगजलतरण जनमजरादुपअंत ॥ ६ ॥ मुनि रिप तपसी संजमी यती तपो धन संत । श्रमण साधु अणगारगुरु वंदोचितहरपंत ॥ ७ ॥

साथीया बंधसर्वलघु ॥ दोहरा ॥ परम मुकतिपद अरपतप करमुनि उपसम चरत। गहि जिनमति भवजलतरतउचत्रवि चलपदधरत ॥८॥ दुमल छंद जिनकेंधर ध्यान सुजानभए सुपदेपत लोचनको मनको । जिनके सुववेन सुचैन वधे परमान किया

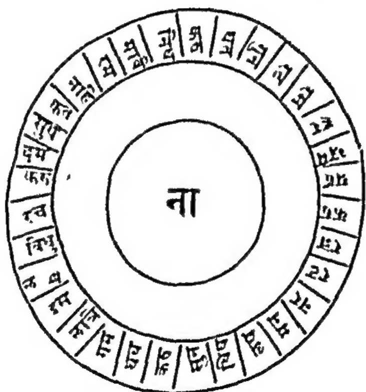
प्रभुता जनको । जिनके
रूप सपुष्ट करे तनको ।
मोगुणगायलहोधिपणा
छंद जिमके तकके दल
मटिके पाहिके मधुके रुत
के विनके लवके घनके
के किचुके नृतुके लटुके
कविके मचु के स्तव के



पगलाग सुभागभए वल
तिनसाधुजती रिपकोप्रण
धनको चक्रबंध द्रूमल ॥
के महिके अलिके चितके
के वनके सरके पिकके मचु
घटके स्वरके सुनके किम
पगके रमके किमके तुटिके
कथ के ॥ १० ॥

अष्टकोणपदाकार द्रूमल ॥ छंद ॥

अष्टकोणपदाकार द्रमल ॥ छंद ॥



दयाल प्रभू तुमरे
सरणा । सरणा
विभो गुण सिंधु
णा । वरुणा गर
मुनि ध्याय भवां
तरणा भव सा
हमरा इहि काज

करुणा कर दीन
पद पंकज का
गति रापण हार
अपार कहा वर
इंद्र करे महिमा
वुद को तरुणा ।
गर चाहित हौ
तुमे करुणा॥११॥

ाधु गुण
माला
॥ २ ॥

थिथाचितके जिनसासनके परमानकहे अघमैलनही वरते जितके धनसाधु सुसा
धनआत्मको प्रणमोसुपदार्यहै नितके ॥ १८ ॥ इति द्वतीयमहाव्रत मत्तगयंद ॥
छंद ॥ पापकिबुद्धजगै जिसकेघट लालचसोपरवस्तगहेंहैं । ज्ञानविवेकदयासमता
तवछांडचले चितकोपवहेहै। तूंवरभारलिएजिमडूवतत्यौं भवसागरडूवरहेहै। सोअघ
त्यागसंतोपगहेहै । रिपसेवकवंदतमोदलहेंहैं ॥ १९ ॥ धाड विचार कठोर महाठग
पापकरी पर अंसगहेहै ॥ छेदन भेदन लोकविपे परिलोकयमादिक पीडसहे हैं ॥
साधतजे अनदित्त पदारथ छार त्रिनादिक वीनलहेंहैं । सो त्रिपतातम लच्छपती
चितपाप अलेप सिद्धंतकहेहै ॥ २० ॥ इति तृतीय महाव्रत ॥ कामवलीसरपंच
लिए करमारि किसूरवडे जिनलीने । दानवदेवफणी नरपेचर भूचर केतक चाकर
कीने। नारिकिपायसुसीस छुहावतलाज हरेवलसाहसछीने। सोरिपजीतालिए रिप
तापस सेवक वंदत प्रम किभीने ॥ २१ ॥ नाग महा वल मत्त गयंद महा वल

केसरि जीतनहारे लापसुयुद्धकरे धरधीरजतोडन कोटमहागरभारे । लोहिमलेगिर
ठाहिदिपावन औरमहाबलप्राक्रमकारे । कामाकियुद्धमुहारचले परसांरितराजकुसाधु
पछारे ॥ २२ ॥ चंचलरूपकियोवनता निधसाजासिंगारसुगंधसुहाई । हासविलास
विकारकरे मुपगीत वनाइकितानउठाई । कामभरीनिरलज्जभईमुनिराज समीपसुका
मनआई । मेरअडोलसुसीलविषे थिरजानतहे भगनीअरुमाई ॥ २३ ॥ सीलमहा
निध दारदभंजन देवद्रुमोमनवंछतपूरे । पापमहारजपंकविना सनमेघ वधावनपुंन्न
अंकूरे । संकटटालनमोदजगावननाकरमावनदुर्गतचूरे । सोपकरेवहुदोपहरेधनधारन
हार मुनीस्वरसूरे ॥ २४ ॥ इतिचतुर्थमहाव्रत ॥ याजगमे धनहेमनगादि रसायण
पोरस पारस पाहन भूमि ग्रहादि पशूगणअंवर भूपणभाजन । आयुध वाहनदास
चमूवन तादिघणी विधहोत परिग्रह संयम दाहन । सोमुनिराज तजे चित सोसुभ
आत्म ज्ञान महा धन चाहन ॥ २५ ॥ लोकविषे वलवंत परिग्रह जीवनको जिस

कोपनिवारचिराजतहै रिपंतसपीतिहआदरपावे ॥ ३३ ॥ मूरपचित्तमलीनमहा
पशु देपकिसाधुकुदेवनगारी । ताडनतर्जनहाथउठावन निंदनसाथनिरादरभारी ।
तौमुनिराजकुकोपनआवत जानपिमा शिवकाजसवारी । तेमुनिकेपग वंदनको
उमगीमनसा भवतारनहारी ॥ ३४ ॥ कालकुरूप अनारजमानव कोपकुपान
कुरूपदिपावे । यक्षपिशाचविताल भयानकक्रूरमहाजव आनडरावे । सिंहभुयंग
गजादिबुरेपशु पेदकरैबहुपीडजनावे । आतमअंग अभंगलपे रिपदेह सुआपन
प्रीतनलावे ॥ ३५ ॥ अथ मान ॥ मानरिमानवमान बुरोमतिमान गुमानन
मानननीको । मानकरीअपमानलहै नविमानलहै वरदेवपुरीको । मानमिटेसनमान
वधेपरमान करो सुभवाकजतीको । मानवजन्मसमाननही कछुधर्मसुमानकजातभली
को ॥ ३६ ॥ देवसमूहसुसोभत सुंदरइंद्रजहा सिरआननिवावे । पंडपतीपगनायक
भूपतिभौनपतीपगवंदनआवे । जोरकिहाथकरे महिमाजसवैनकहै जयकारबुलावे ।
यातिपमें मनमानन आपतसोत्रिणमो रिपराज कहावे ॥ ३७ ॥ आयनमेसुर

याविधमें मनमानन आवतसोअ्रणमो रिपराज कहावे ॥ ३७ ॥ आयनमेंसुर भूमिसवार सुगंधपिंडायवनाय अपाडा । साजवजंत्रसुधारकिताल अलापनरागनि रागअपारा । सुंदररूपसिंगारसुपातर नाचततानउठेछणकारा। लोचनचित्तअडोल सदारिपजानतहे जगझूठपसारा ॥ ३८ ॥ ॥ अथ माया ॥ वक्रकरे चितमित्रपणे रिपुठागकुरूप सुसापगवावे । निंदमईभ्रमजालग्रही गुणहीनकरे नरकादिरुलावे। सम्यकचंद्रअसेतमसोआहि साममहाविपदंभचढावे। सोकपटारिपछारहणेरिपअजेंव सूरसुचूरकरावे ॥३९॥ अंतरबाहरसोभतहै रिजसाचविपेरिपसाचहिबोले । साचकरे करतत्तमहारिप साचकिमारगचालअडोले । दंभमहाठगमार लियोजडचेतन भाव त्रिभेदविरोले । सोश्रणमोतिहूकालविपे रिपमोपमहापुरकेसुपटोले ॥४०॥अथलोभ लोभकिकारनजालफसे पगमीनमरे कपकुंजररोवे । चोरसहेदुख वंधवधादिकलो भसुमानवंकिकरहोवे । लोभविनासकरे शिवमारग नीचगतीगति नीचमुटोवे ।

लोभनिवारसंतोपगहेरिपतांगुण मालसुसेवकपोवे॥४१॥ जाननभूमिनिधान महाधन
औपधसिद्धरसायनवूटी । देखनरिंदविभूतमहा सुखदेवविभूतअनूपअटूटी । चाहन
हीचितमाहिजगे कछुअंतरतेममतासभछूटी । ग्यानविरागसखाकरसंगरमे रिखवी
भतणसिरकूटी ॥ ४२ ॥ इतिचारकपाय ॥ अथभावसचे ॥ कातकपूनममासनिसी
थसमेंतृपरासससीवलभारी । मेघकुहीडरजादिविनानभस्वछंदसाविमलातमहारी ।
त्योंचितभाव विसुद्धसुसीतल संतमुनीसरहैवृतधारी । वंदतहौंकरजोरसदा भवसागर
तारनकेअधिकारी ॥ ४३ ॥ अथकर्ण सचे ॥ सुद्धकियोकरणोतमको गमनागम
भापणभुजनमाही । राखननाखनवेठनमे उपदेसविपेसुभेहैसभठाही । जोकरतत्तरो
रिपउत्तमसोशिवमारगमेंशिवराही । तेमुनिकेपदपंकजको करजोरसदा प्रणमोनृप
चाही ॥ ४४ ॥ चंदननीरकपूर कुलपनदाघहरे त्रिफलामलरोगं । वातविकारहरेत्रिगु
टात्रयजोगविशुद्धहरेअघसोगं । पुटकरेघृत खीरमिठासमहावलवंत त्रिभावलिभोगं ।

पोपस्वयंलय आतमकोरससाध त्रियोगचलेशिवलोगं ॥ ४५ ॥ भूपहणेरिपुराजकरै खितसाधलहे धनधानसवारी । जोत्रयकारज कारकसाथअजीरचमूपत दक्षभंडारि । त्यांमुनिराज त्रियोगविचक्षणधीरलिये सगसंजमकारी । कर्मखपाय सुराजलह्यो थिरआगम अर्थमहानगधारी ॥ ४६ ॥ अथ क्षमागुण ॥ जो अवनीवहुखेदसहे हिमसीतसहे अरुतापसहेहै भारसहै । पर हारसहै अपवित्रपवित्र समस्तगहेहै । त्यांमुनिधारक्षमामुक्षमासमआतमकेरसरीअरहेहै । ताहिनमोतिहुजोगकरीजिनराज किमारगसूरकहेहैं ॥ ४७ ॥ अथवैरागगुण ॥ कामनभोग विलासविषे लखनारिसुता दिकबंधनत्यागी । जानअनित्यअसार अपावनदेहतणी ममताजिहभागी । राजतजे सभसाजतजे षटखंडविभूततजीचितजागी । तेप्रणमोपरमारथसाधकश्रीजिनसासन माहिविरागी ॥ ४८ ॥ अथमनसमोधारनगुण ॥ वाजकुरंग पतंगसमीरत देवनते मनवेगगतीहैं । चंचलचोरचहूंदिसभ्रामकर्कढीटमहाअतिदुष्टमतीहै । सोसमझायाकिया

अपनेवस पापकुवुद्धाकिचालहतीहै । संजमवंत विराजतहै मनकोसमधारन साधज
तीहै ॥४९॥ ताम्रकरेकलधौत रसायणलोहकुपारसहेमवनावे। औपधजोगकलीरज
तोतममूढसुधीसंगदक्षकहावे। वैदकरैविपकोवरऔपधसाधुअसाधुकुसाधुकरावे। त्यों
मनदुष्टकुसुष्टकरै रिपतांगुरुकेगुणसेवकगावे ॥५०॥ अथवचनसमोधारण । मोनरहे
नकहे मुपआश्रव संवरकारनबोलनबानी । तोलकिबोलनबोलनहारनजीवदया उप
देसकहानी । जैनकिवैनसुऐनधरेचितचैनमयासभहीविधज्ञानी । तेत्रणमोतिहुकाल
विपे तिनकीमहिमातिहुलोकवखानी ॥५१॥ अथकायसमोधारण । अंगउपंगसंको
चरहे दृढआसनधारतजेचपलाई । आवनजावनकारजमेयतनाजुतउत्तमरूपयनाई ।
कायकलेसकरे तपउत्तममोसमहापुरकेमगजाई । कायसमोधरणे गुणराजततांपगवं
दतहौचितलाई ॥५२॥ अथ ज्ञानगुन ॥ केतकहै श्रुतिमत्तमई रिपकेतकऔधधरीमन
ज्ञानी । केतककेवलज्ञानमई प्रभुकेतकअंगउपंगवपानी । केतकद्वादसअंगधरीरिप

सर्वैरिपीश्वरज्ञाननिशानी। तमुनिकेपगवंदनते उपजैचितमोसमतासुखदानी ॥ ५३॥
अथ दंसनगुन ॥ सुदृशाधरदंसणउत्तमसत्तप्रतीतजिनागममाही। यक्षसुरासुरनाग
चलावनतोनचलैदृढहै शिवराही। धीरजमंडपखंडकुखंडन पापमृखामतकेगिरढाही।
सम्यकवंतमहंतमहामुनि सेवकतारतहैगहिवाही ॥ ५४ ॥ अथचारित्रगुन ॥ सुद्ध
आवस्यकप्रातकरै गुरुदेवकुवंदसिद्धंतउचारै। ध्यानकरैतपसाविधसाधनभिक्षग्रहै नि
रदोषसभारै। सिष्यनपूछनजाच जिनागमदेउपदेसमृषामतिटारै। रात्रिअवस्यकआ
दिसुचारित्रसाधभलीगतिसाधधारै ॥ ५६॥ अथक्षुध्यादि२२परिसहजीतनगुन ॥
भूपमहावलवंतभजै नरसिंहफणीगजरीछनिवाए। दासभएपरछंदनचवल हीनभएपर
हाथविकाए। कालअकालसुभक्षकुभक्ष सुजातकुजातगिनेनगिनाए। सोमुनिराजलहै
जिनके तिनकेगुणसेवकभाखसुनाए ॥५७॥ भूखत्रिखागरमीसरदी इमहीवहुभांतकि
संकटपावे। कर्मउदेफलमानतहै समताधरभोगनचित्तनतावे। जानतहैछिनभंगरहेतन

ताहिविषेममतानहिलावे । धारतदेहविदेहभएजन तांगुनदेवपतीमुखगावे ॥ ५८ ॥
अथमर्णंती उपसर्गजीतनगुण ॥ चाहतजीवसभीजगजीवन देहसमाननहीकछु
प्यारो । संयमवंतमुनीस्वरको उपसर्गभवेतननासनहारो । तौचितवेहमआतमराम
अपंडअवाधतज्ञानभंडारो । देहअचेतनसोहमतोनहि सत्तचिदानंदरूपहमारो॥५८॥
इतिसप्तविंशतसाधुमूलगुणसमाप्तं ॥ अथ उत्तरगुण ॥ पावसकीचउमासाविषे
निरदोषसुथानकमाहिवसेरो । नारिकलीवपशूनरहेजाहिशुद्धअलेहएजोगचंगेरो । धार
तहाउपवासअभिग्रह पालचारित्रवसेगुरुमेरो । भव्वनकोउपदेसकहे सुनमोदलहैनर
नारिघनेरो ॥५९॥ आठहिमासविहारकरेरिखदेसविदेसविषेउपगारी । भूमिकरैत्रिण
काठकिऊपर आसनसैनअचित्यसवारी । आगमसारविचारउचार किभव्यनकोजिन
नंदिउघारी । काढमृषामतिकूपथकी जिनधर्मनकेतुदिपावनभारी॥६०॥ग्रीषममैरविते

द्वादसमाासविषे तपसाकरज्ञानविरागविषे चितभेवे । संयमसाधुअराधि महापदसे वकको सुपसंपतदेवे ॥ ६१ ॥ साधुगिनेनहिरंकधरापति दीनधनीसमएकसरीसे ज्यौंवरुपारुतपायसुभायसु अंबुदजंगलमाहिवरीसे । जीवनआसनहीं जिनकेअरु कालकुत्रासनहीचितदीसे । तेमुनिकेपगवंदनते जनपापपुरातनकेदलपीसे ॥ ६२ ॥ चाहिनहीनिजकीरतकी सनमानसुपूजनआदरकेरी निंदनवंदनएकसमोसमता सजनीगुनरूपचंगेरी । लोकविषेनहिमोहधरे परलोकअवंछतभेटअंधेरी । हैघट आतमराममहारसते मुनिवंदामिटेभवफेरी ॥ ६३ ॥ घोरमहातपतेउपजे चितओध प्रकाशकितेजदिनेशा । वैक्रयरिद्धभईसुरसी अरुतेजसवंतमहावललेशा । आपअनु ग्रहसिद्धभई सुपुलाकघणीविधशक्तिप्रवेशा । जोनविकारकरेथिरता गहिसोमुनि वंदतवंदसुरेसा ॥ ६४ ॥ मत्तमतंगमृपामातिके नरगाजतज्ञानकुवागउजारे । औरि पराजमहावल नाहरगाजासिद्धंतकुनादउचारे । भागचलेमतमंदमहापशु जोरणके

शवतेरिपुहारे । वादजईजगदीसकिनंदन. तेरिपजीरपवालहमारे ॥६५॥ आतम
रामअनूपअमूरत आदिअनादिअनंतविलासी । चेतकअंगअभंगचिदानंद रंगनरू
पमईगुणरासी । व्यापकग्यायकनित्तविराजित सोथिरध्यानविपेअविनासी । हौंजि
नकीतिनकीगुणमाल रचीचितलायसुबुद्धप्रकासी ॥ ६६ ॥ जोनगकेगुनदोपलपे
नगपारपसाचअसाचनितारे । दक्षसराफलपेकसकंचन वादमिटायकिसुद्धसवारे ।
ज्योंरजसोधकधूलथकी धन काढलएविधसोरजटारे । त्योंजडचेतनभिन्नकरे गुणदो
पलपेमुनिआपसंभारे ॥ ६७ ॥ ज्ञानमुनीरभरीसलला सुरधेनप्रमोदसुपीरानिधानी ।
कर्मजुव्याधहरंतसुधा अघमैलहरंततसिवाकरमानी । इंदुसिद्धंतकिजोतपिडी श्रुतिदे
वसरूपमहासुखदानी । लोकअलोकप्रकासमई मुनिराजचपानतहौंजिनवानी ॥६८॥
संभतदेवविपेमघवाउड वृंदविपेससिमंगलकारी । भूपसमूहविपेवरचक्रपती प्रगटे
बलकेशवभारी । नागविपेधरनेंद्रबलो अरुहैअमरेचमरेंद्रविथारी । त्योंजिनसासन

संघविषै मुनिराजदिपैश्रुतिग्यानभंडारी ॥ ६९ ॥ धातनमेंकलधौतवडो रतनानिच भापतहैचरहीरा । कुंजरमाहिकहैहरिकोडभ केसरिसिंहमहाबलबीरा । फूलनमेंअरु विंदवडो नगकंचलसोनहिदीसतचीरा । त्योंभमसंघविषैअतिचारत धारमुनीश्वरसो भतधीरा ॥ ७० ॥ सासनमाहिकरीटमुसेहर हैतिलकोपमकेतुअमोले । बारधदीप जहाजमणी मलयागरसैनिजकारजटोले । वेदनिजामरथीभटसें जगज्ञानकलातु लियाकरतोले । हंसकपोतभरिंडअलीयति जैनजतीगुणआगमबोले ॥ ७१ ॥ सूर प्रतापससीचितसीतल सिंधगंभीरसुमेरुअडोले । कंजअलेपसुकुम्मवसिद्रय याक कहैजनअंम्रतघोले । वारणधीरअभीतमृगाधिप ओटविनानभधीगुणटोले । वायअ वंधधरासहनेसभ जैनजतीगुणआगमबोले॥ ७२ ॥ आदि अंत एक स्वर॥ साध नसाधुसदामनकीगति पंचमहाव्रतकीविधसाधन ।साधनराचितभोगविषै सुपवंछि तकामकलानहिसाधन।साधनहैकरणीहरनी दुपसावरणीवरज्ञानिधसाधन । साध

नरोतमकेपगकीरज भालधरोसभकारजसाधन॥७३॥साधनराजकिसाजविपे रतवा
निजकोविवहारनसाधन। साधनभूमिकृसानकृयाविच पोपपशूकृयविक्रैनसाधन।सा
धनदूतकलाकरतत्तमुवादि विवादिविपंधनसाधन। साधनरोतमकेपगकीरजभालध
रोसभकारजसाधन॥७४॥साधकहैशिवमारगकेजन सारथवाहिमहापथसाधक। सा
धकथातपसंयमकेरस रीझरहेपरमारथसाधक।साधकहेउपदेसतजोअघहोइपुनीतव
नोशिवसाधक। साधकहैजगदीसकिनंदन वंदनतेसभकारजसाधक॥७५॥साधनजो
तकवैदकमेरसमंत्रनयंत्रनतंत्रप्रगासे।वीरवुलावनथंभनमोहन केलकतूहलरीतनभासे
नाचनगावनतालवजावन पेलसभीतजज्ञानअभ्यासे। तेमुनिराजकिपायधरोसिरवुद्ध
जगेअघअंधविनासे॥७६॥चक्रवंधद्रुमलछंद॥तियकेसुतकेमितकेधनके नरुकेनचुके
नउकेछलके। सुरकेनरकेसुपकेलजके अटकेनटिकेशिवकेथलके।जिनकेतपकेवलके
[illegible] केसिरकेमणिकेझलके७७

[illegible] । [illegible]

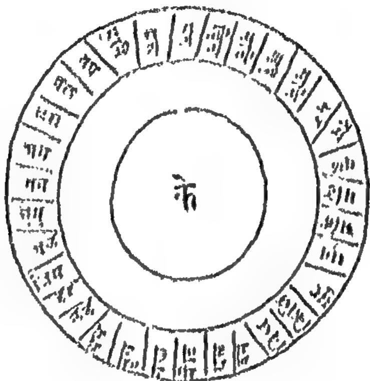
भानु कुमा गाजा ॥२१॥

सुरकं सुनकं अटिकं मटिकं पल्कं । तमकं

भरकं सनिकं छविकं नटिकं द्विनकं पनिकं

छल्कं सुनिकं नपकं बल्कं ल्सकं अवकं

तिनकं जुमुकं नल्कं ॥७८॥



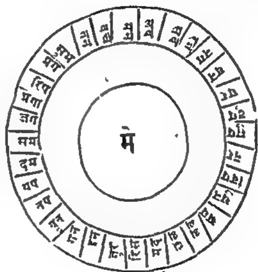
सममे दममे जपमे तपमे व्रतमे गुणमे इनमे जुरमे। रिसमे मदमे छलमे लवमे अघ

मेथुनमे विपमेनरमे। शुपमे दुखमे घरमे

वनमे नगमे रजमे सवमेलवमे मनमे

वचमेतन में शुभमे प्रगमे रिपमे प्रणमे

जगमे ॥ ७९ ॥



॥ एकादिचौदप्रयंत सिपया कथन मत्तगयंद ॥ छंद ॥ आतमएकसरूपलि

छाडादिधामगञ्जाअडकाइक भापमहामगभाचतद्दानी । तजपमाइकापपरत
आपसंभालमहाजमलीनो ॥८०॥ एकहिदिष्टिमुचालचले आहित्यौंमुनिराजसदाइक
चाली । खग्गक्रियानसमानरहे इकसर्वतजीइकमोक्षसभाली । खायकपूरणसर्वविपे
नभमैंसभलोकअपेगुणमाली । आतमरामलपेनभसे परचेतनवंतअसूनविसाली ८१॥
संतकुमारथकीपुरुषासुर आनततेइकरंगविमानी । एकहिदिष्टिविमानअनुत्तर एका
वीलवलसमज्ञानी । सोनभज्ञानकरीमुनिजानत भापतहैइकआतमध्यानी । तेमुनि
कौइकवारसिंदकरसेवनते जनउत्तमथानी ॥ ८२ ॥ अज्ञयागभैविवरासकही मुनिजी
वअजीवकिभेदसुनावे । सर्वरुनीअरुदेसरुनीमुनिदो विधसाधिकरूपवतावे । अंत
समैमरणाविवभांतकुबाल अबालकुरूपादिपावे । तांपगकंजअलीजनके हगदोश्रुति
धारसुनोसुअभावे ॥ ८३ ॥ दोविधवधनतोडतहे दुहुभांतकुधर्मअनूपधरैया । दोग
निछेदनलोंविचहूं भवदोगनिऊरधमेउपजैया । लोकविपेपरलोकविपे समादिष्टसमेत

दुर्लभवपैया। तेमुनिकेपगदोहमरोसिर दोकरजोरसदाहरपैया ॥ ८४ ॥ वालजुवा वयवृद्धविपे उपसर्गत्रिधासहिचित्तनतावे। सम्यकमिश्रमृपालपके तिरयंचमनुक्षसुरेसमझावे। सज्जनदंडनगारवधारत त्रैपदबोधनहेतुसुनावे। तेमुनिकोतिहुवारप्रदक्षण देत्रणमोसमतासुपञ्चावे ॥ ८५ ॥ त्रैजगजानत्रिहुभवनेयसतोनहिकालकिवातृपतैया। तीनसुगुप्तधरीतिहुमैचित दंसनज्ञानचरित्रसुहैया। त्रयगुणकीजगरीतलपीत्रय लिंगविकारमिटायादिपैया। तेमुनिवंदतमोदलहोत्रय संघविपैगुणग्रामपठैया ॥ ८६ ॥ चारकपायकुछाडतहै गतिचारकुछाडपरेचितलाई। चारसुधर्मवपानतहै चतुहीसरणसुपशांतवताई। चारप्रकारकिदेवकरे जसवेदचहूंउपमामुनिपाई। तेप्रणमोचहुभंगप्रकासक मंगलचारसदासुपदाई ॥ ८७ ॥ चारप्रकारकिवुद्धजगी घटमोक्षकिकारणचारवपाने। तीरथचारकहेशिवसाधक लोकचहूंपुरुषारथजाने। दुर्लभ

मुपगाने ॥ ८८ ॥ पंचप्रमादितजेमुमतीधर पंचजतिंद्रयप्राक्रमभारे । कामकिवानन पंचलगे जिहपंचमहाव्रतसुद्धसवारे । भूपणपंचसुज्ञानमई धरपंचमहीगतिमोचित धारे । पंचपदेपरमेष्ठदिपावनसोप्रणमो गुणरासअपारे ॥ ८९ ॥ आश्रवरोककरे शुभसंवर पंचचरित्रकिभेदसुनावे । थावरसूपमवादरजानत पंचविधिजगजीवबतावे। पुन्नअनूपअनुत्तरपंचकुपंच विधेमुपउत्तमपावे । सोसभज्ञानकरीमुनिजानत वंदत दाससदागुणगावे ॥ ९० ॥ लोकसभीपटदर्वमई लपजीवछकायकिरापणहारे । अंत रकोपटभांतकरेतप वाहरकेपटभांतपसारे। पठआवस्यकसुद्धकरे पटरुत्तविपेशिव कारजकारे । तेमुनिकोयसदेवकरे पटरागसरागणिगीतविथारे ॥ ९१ ॥ सूपमसूप मतेपटभांत किदूपमदूपमतेपटआरे । कालकिभेदकेहयुत लछणलेशछहूंरंगरीतवि थारे । जानतहैपटग्रंथनकामति वेदपटंगलपेगुणधारे। तेमुनिकेपगसीसधरे पटपंड पतीगुणग्रामउचारे ॥ ९२ ॥ दूतकपादिनिपेधकिएनरकावल सातकुत्राससुनाया ।

सातनयालपनिश्चलश्रातम सातभयानकतेनडरायां । तेमुनिकोयसदेवरतीस्वर सात
सुररयमंगलगाया । सातश्रणीपुतदेवपती तिनकेपगऊपरसीसछुहाया ॥ १३ ॥
सातहिराजप्रमानअधोजग सातमहीतिनकोरिपवोले । ऊरधलोकसुसातहिराजकु
तेपिरयामुनिराजफरोले । श्रोडकसातहिवारअराधक संयमसोशिवहोइश्रडोले ।
सातहियारसदाप्रणमो रिपजोसमझायमिटावनभोले ॥ १४॥ श्राठनहीमलश्राठग
एमदश्राठहिकर्मसुपुद्गलचाया । श्राठरुचेगुणसिद्धनकेवस श्रागममातगहीसुपपाया
श्रष्टविभक्तिसिद्धंतउचारत श्रष्टदिसाजनसेवनश्राया । संपतश्राठकरीगुरुराजत आठ
हिजामगुनीगुणगाणा ॥ १५ ॥ श्रष्टमहागुणधारतजेगण श्राठनमित्तपछाननभापे
श्रष्टमहापरदसविपे · थिरसम्यकश्रठगुनीगुननापे । इंद्रविरांगणश्रष्टमिली तिनके
जसगीतकरेरसचापे । श्रष्टसुसिद्धलहेनरसो मुनिराजकुजोउरश्रंतरराये ॥ १६ ॥
[illegible]

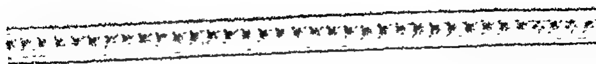
हेनवतत्तवपाने । नोरसकोजगरीतलषो मुनिटालनदोषनवेजुनियाने नोग्रहसेयनतो
मुनिकोअरुनोविधनाथनवेगुरुमाने ॥ ९७ ॥ सर्पनमेडतसर्पनमेनव अंतरसोहरि
करिपहांवे । ताहिहंणहरिदेवमहाजस राजअभीतकरेसुपसांवे । तानयकेनवभ्रात
महाबल संयमसोगमिउरधढोंवे । तेमुनिकीउरगादिनवेगण देवभलीगुणमालपरोंवे
॥ ९८ ॥ त्यागपरिग्रहकोदसधादस धर्मधरेदसेनमवपानी । मानवआयुदसादस
जानकहेउपदेससुनेदसप्रानी । ज्ञानदसोदिसफैलरह्यो वरसीलसमाधिदसोविधठा
नी । जोतिकभौनपतीतिरजंभक सेवनपूजनइंद्रविमानी ॥ ९९ ॥ पापउदेनरकेदस
धातुप जीवसहेनहिआश्रयकांको । पुन्नउदेप्रगटेदसधासुप कल्पतरोवरकोजुगलां
कां । साधदसांगभलीकरणी शिवपावनवापदऊचसुरांको । फेरदशांगमईनरकोभव
ओडकसिद्धकह्योयसतांको ॥ १०० ॥ आगमअंगइकादसभाखण श्रावककीप्टतमा
प्रगटाई । ऊचविमानइकादसही शतजोजनआवतहांजिनपाई । संयमसाधुअनूप

नरोकनहारविनासी । मोहमिटायतथाअंतराय हणेचतुघातककर्मजुत्रासी। कवलदं
सननानसदाथिर लोकअलोकपदारथभासी । सक्तिसभीजिसमाहिमहापद पूरणब्र
ह्मसुछंदविलासी ॥ ११८ ॥ ओडकदेहउदारककी जिहकेसनरोमनहीनपवाढे । अं
तनहीवलअक्रमकासुप कोगुणकोकरुणारसगाढे। दोपनहीजिहमोपभयोढिगजीवन
अधमहारसठाढे । तेप्रणमोअरिहंतप्रभूभव सिंधपरेजनकेतककाढे ॥ ११९ ॥ सर्व
मईप्रभुसर्वलपीजिनसर्व सिरोमणिसर्वसुव्यापी । आतमरामअनाश्रवउत्तम ओडक
साधुअगाधप्रतापी । निश्चलचित्तनिबंधनिरामय नाकपतीप्रणमैस्तुतथापी । कर्मनि
वारअियोगतजे शिवमारगमाहिचलेवलआपी ॥ १२०॥ सर्वमुक्ताक्षर ॥ घणाक्षरी
छंद ॥ कनकरजतधनरतनजडतगण सकललपणरजसमसतजनवर । हयगजरथ
भटवलगणसहचर सकलतजनगड वरननमयघर । वनवनवसनरमणसतगतमगभ
यभयहरनचरणअघरजहर । उरगअमरनर करनहरपजस जयंजयभणभवजण

वरजसकर ॥ १२१ ॥ मनहयवसकरतपनअनलमथ मदगजदलमलकपटसरपहर । लवठगपकरतपटकपटकवत मरकटचपलकरणपणफडकर । रपवलअनलदहनवन मनमथपरदलदलनअनघभटहलधर । सवलकरमहरचडनअटलगड जयजयभणभ वजणवरजसकर ॥ १२२ ॥ करमसवलभड अडनकठनगड लडनफडनपरदलव लछलकर । सतजनपरमधरमदलवलधर चडनचरनतपभडवरवलधर । लडन परसपरकरणसवलवलपरदलदलन दरसलपतपवर । परहरकरमपरमपदगडचड जयजयभणभवजणवरजसकर ॥ १२३ ॥ सकलजगतपर अचलअमलवर अगम अलपपद अटलअकथजस । धरजलदहनपवनवनतसमय सकलअटकतज परम सदनपस । सरपअमरनरकरणहरपजस वचनपरमरसभवजनदसदस । जगतरव रहरपरमअनघभवभव जलतरवरजसकरहरजस ॥ १२४ ॥ कलसमालनी छंद ॥ अठदसवरपेचोंसठेचेतमासे ससिमृगसितपक्षेपंचमीपापनासे । रचमुनिगुणमालामो

दपायाकसूरे । हरजसगुणगायानाथजीत्र्आसपूरे ॥ १२५॥ इतिश्रीसाधुगुणमाला हरजसरायकृत संपूर्ण समाप्तं ॥ शुभं भवति ॥







श्रीवीतरागायनमः ॥ अथ देवाधिदेवरचणा लिख्यते ॥ दोहरा ॥

सकल जगतपति पर
न परम जोति राजत
न ॥ १ ॥ वंदो श्रीरि
अरिहंत श्री चंद्रान
यंत ॥ २ ॥ श्री सीमं
मान जिनवीस वंदेहु
गुण निसदीस ॥ ३ ॥

मपद पूरण पुरुष पुरा
सदा सो वंदो भगवा
पभादि जिन वर्द्धमान
नदेवथी वारिषेण पर
दर स्वामिथी विहर
रजस भक्ति धरगावे
जिन जग ज्ञान प्रका

सकर मिथ्यातिमरमिटाय ॥ भवजनकोशिवमगदीयोसोवंदोजिनराय ॥ ४ ॥ द्रूमल
छंदकमलबंधयुग्म ॥ परमेष्टमहापदपंचनकोपहिले प्रणम्योपहिऊठसदा। परमारथ

ऊंपणपावनको परमातमकोपहिचानमुदा भवसिंधजहाजउतारनको सिमरोमनमोव

देवाधिदे वाचना ॥ २ ॥

रपंचपदा दिनके सुप — के घरंभव्वनको शिव
सापनको सुपदा हि — कदा ॥ ५ ॥ रिपरूप
वरं रिपधर्मधरं रिपहे — दयुतं रिपभादि जिनं
रिसमान सुपारिप न — वेहरं रिजपंथवहं रि-
णद्दोपहणं भ्रमभीन — हरं चितशांतकरं दुप
दोपहतं शिवशंकरणं — परम पुरुपारथ मोप
धरं प्रणमो अरिहंत — पदा रमणं ॥ ६ ॥

समुनेतीर्थंकरवर्णणं ॥ दोहरा ॥ आरजदेससुधर्मकुलराजवंसविप्यात । नरतन
ऋषिपमभसहितमातपितामभजान ॥ ७ ॥ वजररिपभनाराचतनसमचौरंससंठान ।

देयाधिवे
वरचणा
॥ ३ ॥

चक्रवर्त्तकेतेभएनिधरतणायुतसाज ॥ १० ॥ परमउदारकतनाविषेराजत श्रीजिनचंद ।
सासोसाससुगंधमयवंदोपरमानंद ॥ ११ ॥ राजरिद्धसुपभोगतजगहिचारित्रमुनिवेस ।
करतपसंजमकेवलीदेतधर्मउपदेस॥ १२ ॥ मतश्रुतिज्ञानसुअवधधरमनपर्ययवारिपरूप ।
कर्मघातकीपयकरीकेवलज्ञानअनूप ॥ १३ ॥ अवढतकचनपत्रघटछविविपनलगत
सुभदेह । जघिन्नसातकरओडकेपंचसेधनुगुणगेह ॥ १४ ॥ समोसर्णपदमासणेचौ
तिसअतसयसाथ । वाणीगुणपनतीससोभापतत्रभवननाथ ॥ १५ ॥ मानवसुरतिर्यं
चजियभव्यसुनेचितलाय । निजनिजभापामाहिसभअर्थसमझसुपपाय ॥ १६ ॥ चौ
रासीलपपुव्वलग । जघिन्नवहत्तरवाससूपमदूपमअंतधरदूपमसूपमवास ॥ १७ ॥
केजिनपगचक्रीलगैकैहरिवलवंदेह । मंडलीकराजेघणेसभजिनभजसुपलेह ॥ १८ ॥
भर्तइरवर्तदसविपेविजयएकसौसाठ । जिनचक्रीहरिवलजन्ममध्यपंड श्रुतिपाठ ॥ १९ ॥

देवाधिदे
वरचणा
॥ ४ ॥

जिहचक्रीतिहहारिनहीहारीढिगचक्रीनाहि । एकपेतविवहूनहीजिनहारिचक्रभराहि ॥ ॥ २० ॥ दर्वभावविधगुणसाहितदयाधर्मअवितार । वंदोश्रीजिनपर्मगुरुसिमरेभव जलपार ॥ २१ ॥ अथ श्रीजिनमनगुण सवैया ३२ ॥ कमल वंध ॥ ४ ॥ परम

अनघगाति परम धरम
रम विशद भग परहर
पथ परचत समदमपर
जिय हित सतसुप चि
अचल अमरनग अल
मन मथ जिणवर मन

रितपरम विमल मंत प
भ्रमसभ परस मुकति
प सकलजग सवजग
तवत करमहूरण हत
प अमितनभ जितमद
इमरमत अडग मग

श्रुद्धसमसतश्रुदसमरससकलमविकाहत । सरनवरणनयसरवसुविवनयसतगतम
गनरसमअतसतचित । प्रगटकरतसभसमश्रुतिअनुक्रमघरमसुविधदसदसतसहित
मित । गरजनघनमयपिकधुनरसमयसभसुरगुणधरजिणवरवचइत ॥ २ ॥ कायगु
ण ॥ मनुजसुगतमयमलनलगतजिहमदनानिकरजयमणिदुतजिणवर । मनुजअसुर
सुरमनवचतनथिरमगननिरपजिहमननअतुलकर । चिहनरुचरमयवरणसुछविजिह
दरसणअचक्षयअरुजसुगणघर । रुधरधवलधरजिणवरवपुवरअमितसुबलजिहन
मतभगतधर ॥ ३ ॥ त्रियोगीगुण ॥ करणकरणवसकरमसवलजितकलमलरजह
रकरणपरमसुप । करणचरणविधकठणधरणनितकवणअवरसमकहितानिपुनमुप ।
अमितअतुलजसवरननसुरपतिपरमभगतउररचणधरमरुप । सकलसकतनिधपरम
सुगुणयुतमनवचतनइमहरणजगतदुप ॥ ४ ॥ सर्वगाथा ॥ २५ ॥ मत्तगयंदछंद ॥
आतमगुण ॥ जोजनएकमहादिवकेसममोदमहासुरजोगजहाहै । प्रादभएसुभनी

देपञ्चसंपमुथाने ॥ ३४ ॥ चक्रपतीवरकेशवश्रीवलदेवमहान्रपमंडलराया । भक्तिकरी
चतुरंगचमूसजनादवजंत्रसमेतसुहाया । श्रीजिनवंदनपुछनहेतसमोसरणेपरिवारसु
आया । तीनप्रदक्षणदेचरणीनामिधर्मकथासुननेचितलाया ॥ ३५ ॥ साधुमहातमसा
धविकेगणश्रावकश्रावकणीमुपामिष्टी । भव्यचहूंविधदेवसुरांगणपेचरपेचरणीसमादि
ष्टी । पुन्नंउदेतिरयंचतथात्रियासोभतधर्मसभागुणग्रष्टी । श्रीत्रयलोकपतीप्रभुसुंदर
सोभतमध्यसुधाघणवृष्टी ॥ ३६ ॥ जीवअजीवकुपुन्नकुपापकुआश्रवसंवरकोनिर्जरा
को । बंधकुमोपकुभापतहेअणगारअगारकिधर्मधराको । सर्वहिजीवकिठामगताग
तिआयुक्रियाचितभावगिराको । भोगसंयोगवियोगसभीजियकेप्रभुजाणतपर्मपराको
॥ ३७ ॥ दानमुशीलतपोयुतभावचहूंविधिधर्ममहाफलदाता । मोपकरैसुपस्वर्गभरै
नरलोकविषैवहरिऋमिलाता ।

रिद्धणिसुपभोगतजेमाहिसंजमवेशा। श्रीजिनसासनमाहिभणीरपञ्चाउदिएभुवभारक
ल्पशा ॥ ३९ ॥ जासप्रसादभएसुरसिद्धविमानअनुत्तरमाहिविराजे। देवभलेश्राहिमिं
दभएवडभागरुरिद्धमहाछविछाजे। देवगुरूपदइंद्रसमाणकलोकपतीपदवीगुणसाजे
चक्रपतीवलकेशवभूपमहाधनरिद्धलईजगगाजे ॥ ४० ॥ जासप्रसादफणीगजगामु
गनाहरवानरश्रौरकहेहें। दादरपंचरभव्यघणेपिछलेभवजातपछानरहेहें। भक्तिभ
एसुभभावकरीतपस्वर्गकिभोगविलासलहेहे। भोगभलेजुगलाजनकेवहुरिद्धनरिंदथ
नादगहेहें ॥ ४१ ॥ वेदपुरानपढेरचयज्ञरिश्रायकिदेवमहापदपाए। वादजयेगुरुभा
नकवीहरचारदमारदकंठकहाए। चित्रपतीपरवजेकगजेतश्रायप्रभूदिगहीविसमाए।
देपप्रतापलगेचरणीकुलप्रणकरीसमभैमगत्राए ॥ ४२ ॥ वेदपुरानकिंधारकहेउत
हासकहेगभवेदकजाने। श्राठहिश्रंगनामिततपेरचश्रंगगुणेवहुभागपछाने। कोशथ

रेवहुशब्दकोंसाधानयुक्तिकरैवहुछंदवपाने । न्यायकश्रौरघणोविधपंडतश्रीजिनजीत
लियभ्रमभाने ॥ ४३ ॥ गौतमपंदकसोमलसोसिवरायारिपोशुकदेववपाने । याविध
भव्यश्रनेकतरेभवसिंधजहाजप्रभूपगमाने । श्रापतरेवहुतारतहैप्रभुश्रीजिनदेवजिनं
दसुजाने । सेवकवंदतहैकरजोरकरोमुझपारदयानिधदाने ॥ ४४ ॥ साधविसाधुनि
यानकियोजिनवीरछुडायश्रराधिककीने । मेघकुमारगिरंतकियोथिरसारथसाथसंभा
लहिलीने । याविधश्रौरघणेजियकोजिनराजसमाधमहासुपदीने । सवंजिणंदकरेइ
महीनितसेवकवंदतप्रेमकिभीने ॥ ४५ ॥ मानपलोपमसागरकोसुनाचित्रसुदंसनकोचि
तआयो । श्रीजिनताहिदिपायभवांतरदेवपणोनररूपदिपायो । पायविरागभयोमुनि
उत्तमयाविधभव्यश्रनेकतरायो । तोडमहाअघजालदियोसुपदेवासिरोमणनाथकहायो
॥ ४६ ॥ केशिकुमारकहापरिदेसिकुसंजतशयरिपोवनवासी ॥ सैनककोसुश्रनाथ

फासी । श्रीजिनश्रीजिनकेमुनिराजकरेउपगारमहासुपरासी ॥ ४७ ॥ धर्मकथाअति
सुंदरश्रीजिनराजकहीसभहीसुपपाया । केनरनारिलियेरिपचारितकेअनुव्रतलईमग
आया । पुनउदेतिरयंचतथात्रियश्रावककेसमदिष्टसुहाया । देवभएजगताअतिमोद
तसर्वहिभव्वनमीगुणगाया ॥ ४८ ॥ भक्तिकरेसुरराजमहापटनाटकगीतवजंत्रवजावे
अद्भुतहासर्सिंगारमहारससोभतहे करुणारसपावे । वीरमहारससाथसजेरससंतस
मोसरनेढिगआवे । धर्मसमोसरणेअतिमोदमहानिजराजिनराजवतावे ॥ ४९ ॥
॥ दोहरा ॥ सकलजगतरछ्यालप्रभुसुकलध्यानभगवंत । वंदोश्रीजिनपर्मगुरुजिह
ढिगकरुणासंत ॥ ५० ॥ आदिअनादीरीतसुरकरेभक्तिउतसाहि । रागद्वेषतेंरहितप्र
भुसर्वदवेंअनचाहि ॥ ५१ ॥ भवजनपावेभक्तिफलअघपयसुकृतवंध । इहभवपरभव
सुपलहेजगेवोधमिटअंध ॥ ५२ ॥ भक्तिज्ञानविवभांतसुलहैस्वर्गसिवपेत । तिहका
रणरचणारचीनिजआतमकेहेत ॥ ५३ ॥ मत्तगयंदछंद ॥ श्रीजिनदेवमुनीसकिद्दंस

णआवतदेवपतीहरिपाई । सुंदरयानविमानविपिचडसाथसभीपरिवाःरसझाई । तीन
प्रदक्षणदेचरणीनमिधर्मकथासुनप्रीतलगाई । फेरनमैकरजोडरचैवरनाटकगीतमहा
चतुराई ॥ ५४ ॥ सिंहाविलोकनछंद ॥ यमकाअलंकार ॥ सोहेसुरराजराजसं
पतयुतयुतदेवीगणदंचवरै । जिनवरपगवंदवंदणाकरकरपेख्याघरसुभभक्तिकरै । दाहण
भुजकाढकाढतिहतेवरदेवकुमारअनूपधरै । कुमरीबहूरूपरूपजोवणनिधवामीतेसुर
प्रादकरै ॥ ५५ ॥ किलगीसिरमुकटमुकटमालायुतमालगलेमणिमोतनकी । टीकावर
भालभालसमणिकीमणिकुंडलछविजोतनकी । वैसरवरनाकनाकवासीसुरसुरतधार
आभर्णगले । भूषणभुजहाथहाथपगअंगुलकटसभअंगउपंगभले ॥ ५६ ॥ गंधतव
रवरणवरणवरणाकेवर्णयोगपटकंतछवी । लेपणसुभगंधगंधमुपसुंदरसुंदरयपुञ्जपकेतु
दवी । घमघमघुमकंतकंतपगचंघरूनेवरछणछणकारकरै । गुंजतअभिमालमालती

मइ। प.लामलपलपलकातकककौतुकांवेधनरलोकभइं। नरसिंहपूरपूरसंपोत्तमउत्तम
झालरभेरतुरी सुरगणउलसतसांतसंभेकचितचितमोजिणवरभक्तिफुरी ५८ मनवचत
नसुद्धसुद्धविवलोचनलोचनरसजससुद्धग्रहे होविसुरभक्तिभक्तिग्रतिउरधरधरचरणा
सिरमोदलहै। साजवाजंत्रजंत्रवहुविधकेवहुविधगीतसुरागगहे। सातोसुरतालताल
काबाजेवाजेमादलमोहरहै ॥ ५९ ॥ गावेगंधर्वसर्वस्वरपूरणपूरणविधगुणग्रामकरे।
नाचेनटदेवदेवरचणारचरचनाटिकनटरूपधरे। घंटाघणघोरघोरघणघटर.वरवटोल
कवरढोलरमै। छेणेछणकंतकंतधुनछंननछिनछिनप्रभुपगदेवनमे ॥ ६०॥ वत्तीसोभांत
भांतभांतनकेनाटकस्वागअनूपकरे। गावेसमरागरागनीसंयुतसंयुतमुरछाग्रामधरे।
देपेजिनचित्रचित्रनानाविधनानाविधमुररिद्धठवे जिनवरसर्वग्यसर्वदर्शीप्रभुप्रभुस
माधिथिरचित्तभवे ॥६१॥ महिमाइहिदेपदेपवहुतेजनजन्मसफलमनमानरहे धनधन
धनदेवदेवललनाधनधनजिनभक्ताप्रेमगहै। जयजयजयकारकारणेशिवपदशिवपद

थावनहाभ्रणे । हरहरअगपुंजपुंजसुकृतगहिगहिजिनधर्मपुनीतवने ॥ ६२ ॥ कीरत
रचछंदछंदयुतभूपणभूपणसजसुरकंठधरै । केतककरजोरजोरकरचितकोश्रीजिणवर
कोध्यानकरै । मुनीमनगुणधारधारसंयमतपतपतमेटाचितसुद्धभए । तूरनीरसंसारसा
रकेवललहिलहिपदमोपअडोलथए ॥ ६३ ॥ जोजनमितपेतपेतदिवसमाजिहसुभस
वदादकप्रादभए । फुल्लनकेढेरढेरओपधरजगंधधूपसुपदानथए । पट.रुतसुपदेवदेव
दुंदभिधुनमंदमंदसुभवायचले । प्रभुकेउएदेसदेसदेसोकेसुरनरतिर्यंचसुनतभले ॥
॥ ६४ ॥ सिंहासनरत्नरत्नमयऊपरप्रभुअनूपतनसोभरह्यो । छत्रोतमतीनतीनजग
प्रभताचामरशक्रईशानगह्यो । भामंडलजोतिजोतकीजीतकतरुअसोकयुतरिद्धजहा
राजतगुणऊचऊचनभभेदतळचुसहंसयुतकेतुमहा ॥ ६५ ॥ मणिमयबहुवर्णवर्णबहु
मिथ्यतधर्मचक्रगरजाटकरै । उत्तमजयचंतकेतधुनमुनकरवादीजननिलपायपरै । केते

तेवांमंदि
गरणा॥
॥ १५ ॥

जिनकाजथए ॥ ६६ ॥ गंधोदकवृष्टिवृष्टिमनमोहनपुष्पवृष्टदलवृष्टमला । दसादस
उद्योतहोतनिसवासरगमनागमसुरसंघमिली । चिंताभयरोगसोगदुष्टाअवमैछलभ्रम
भमअघहोरघणे । इहिहोडनकोइदीपतिसमंडलसमोसरणजिनराजतणं ॥ ६७ ॥ ॥
जिनवरचितशांतशांतदसयतिवरवरमंत्रीकरुणागरजे । सेनापतिवीरवीरद्वादसतपवर
सन्मोसर्णसिंगारसजे । सुरगणवनभक्तिभक्तिजवपावेहासमहारसताहिविषे । प्रगटे
सुररिद्धरिद्धमुलिव्धंतहिअद्भुतरसदक्षलिपे ॥६८॥ दानवसुरसाथसाथफणगुरुडेसुक
सीनानकपोतघणा । गजमृगमृगराजराजतेसीतलजिनवरउपडपशांतमना । इमइ
मवहुजातजातजीवनकोरलवैठेनिरवैरभए । अद्भुतरसजानजानाजिनदेपनश्रीजिनरा
जअवलपगए ॥ ६९ ॥ वाणीउपदेसदेसणाअद्भुतअदभुतरसतिहमाहियया । इकइकस
व्दार्थअर्थसंप्यानहिश्रुतिदेवीजिहवासलिया । सुनसुनजिनवैनचेनभवजनचितसुधा
पानरसधायपिया । जयजयजिनराजराजअविचलाजिहजिहपगअरचनदेवकिया ७०

आतमरिपमोहमोहकीसंततजन्ममर्णदुपहानथया । तिनकोबलपंडपंडचूरणकररु
द्रमहारसकाजाकिया । तनतेसबदर्वसर्वविठासमसमझताहिविभछाडतहै । हिंस्या
दिकदोपमोपमगघातीताकोभयरसराजतहै ॥ ७१ ॥ आठोरसरूपरूपअपनेसुशां
तरसेस्वरपासरमे । साधेसवकाजराजरचणारचपायलागवहुवारनमै । सोहिरस
शांतशांतरूपीचितचितजिनवरकेमाहिवसे । जयजयजिनचंदचंदत्रिभुवनकोत्रिभुवन
केवलज्ञानलसै ॥ ७२ ॥ तुमसमनहीसूरसूरारिपमर्दणहारिह रंविधनाहोरथणे । तव
गुणगणशिणतगणकलिपलेपकथकतसेसगुरुकौनभणे । हैप्रभुजगदीसदीसनिस
वंदोवंदोभवभवश्रीधरजी । जयजयजिनदेवदेवदुवनकेकारकरुणाकरुणाकरजी ७३॥
भगवनसरवग्यसर्वदर्शीप्रभुलोकअलोकप्रकासधुणी । रागादिककर्मभर्मतेरहितेअ
गमअगाधिअपारमुणी । घनकनयनपातरातेकतारेगिणेकोनजगमाहिगुणी । महिमा

देवाधिदे
वरचणा
॥ १७ ॥

मूरततवपदपंकजपर्सणको । श्रावकमुनिवृंदवृंदसुअधर्मीधर्मसभातवदर्शणको । मेरे
मनइछइछपूरोप्रभुप्रभतातवपरलोकभई आपणकरदासदासकोदरसणदेवोमुझमन
चाहिथई ॥ ७५ ॥ दोहरा ॥ लघुबुद्धीकेतेकहुंतुमगुणअमितअनंत । अंजलभैकेते
ग्रहोजलनिधजलदृष्टंत ॥ ७६ ॥ तुममातातुमतातगुरुसाधुसर्णकेठाम । दर्शणदे
वोनाथजीश्रीसीमंदरस्वामि ॥ ७७ ॥ भवजलशिवपुरअंतरेसंजोगीधरसीम । श्री
सीमंदरस्वामीजीजहावसोदसभीम ॥ ७८ ॥ अहिगजकेहरचोरतेशिषजलबनरण
रोग । व्यंतरमानवदूरभयसभहीहरदुपसोग ॥ ७९ ॥ निश्चलचितसिद्धांतरसवि
घ्ररहिततवसेव । इहिभवपरभवधर्मरुचरहोमुझेसुणदेव ॥ ८० ॥ मत्तगयंद छंद ॥
कोउभजेहरिशामविरंचहिइंद्रससीसवितापितरांको । शेसगणेसशिवादुरगाजलपा
वकवायुरमाइतराको । जक्षसुरासुरनागघणेजगनायकशक्तिअनेकधराको । सर्वति
उत्तमतारकश्रीजिनसेवकसेवनशांतकराको ॥ ८१ ॥ दंसनवंदनपूजनसेवनश्रीजिन

देवकुमंगलकारी । श्रीरतणारनध्यानलगावनरूपदिपावनमेंगुणभारी । जोनरनारिसु
निरपणादुपदोपहरेंसुपशांतभंडारी । जेनजवाहरपावतसोजिनपुत्रकिएचितलायश्र
पारी ॥ ८२ ॥ दोहरा ॥ श्रीजिणवरगुणनिधश्रगमसुरपतिलहेनपार । नमोनमोज
गदीसजीभवजलपारउतार ॥ ८३ ॥ नवरसरंजतस्तोत्रइहछंदश्रनूपमश्रर्थ । पढत
सुनतिश्रातहर्षचितशिवदिवसर्वसमर्थ ॥ ८४ ॥ गीया छंद ॥ कलस ॥ श्रीजिननाय
कपेमदायकमुक्तिलायकपूजीए । गुणरतनश्रागरज्ञानसागरसेवनागरहूजीए । पण
साठसंमतसैश्रठाराहिचेततिथश्रतपदभणी । विधदिनकसुरपुरनमतहरजसदेहुश्रभु
समतापणी ॥ ८५ ॥ इति श्रीदेवाधिदेवरचणा संपूर्ण ॥



अथ श्रीहरिचरणप्रारंभ्यते ॥

॥ दोहरा ॥ [illegible]
जोगतेजाय ॥ १ ॥ देवविमानीजोतकीभवनपतीवनवास । चारजातवहुभेदसोंजिन
वरकीयोप्रगास ॥ २ ॥ रागसाथसंजमकीएग्रहीधर्मव्रतपाय । वालतपस्याकटकर
अरंअकामनिजराय ॥ ३ ॥ अंतसमेसुभभावसोंमानवअरुतिरयंच । तजसरीरसु
रगातिलहैरमेविपेसुपपंच ॥ ४ ॥ दयादानतपभक्तियुतपुन्नतरोवरलाय । सिंचभाव
जलफललहैसुरगतिरससुपपाय ॥ ५ ॥ अथनवनामपुन्नवर्णनं ॥ दोहरा ॥ पान
पानथानकवसणसैनदानविधपंच । मनवचकायासुभरमणनमणपुन्ननवसंच ॥ ६ ॥
सुद्धबीजआछीधरणबीजनकीरुतहोइ । जमैंपेतवहुफलकरैंतिमसुक्रतिफलजोइ ॥ ७ ॥
अणमोदनतेफलवधेनिंदनतेघटजाय । सुभकीकरअणमोदणापापानिंदमललाय ॥ ८ ॥
॥ अथ पंचिंद्रयसुपकथन ॥ दोहरा ॥ नाटकगीतवजंत्रधुननिजकीरतसुनकान ।
तिइंद्रयसुपमनमगनपुन्नउदैफलजान ॥ ९ ॥ सुंदरवपुभूपणवसणरूपवतीसेपेल

देवरचणा
॥ १ ॥

कनकनिविधमणिमयसदनदगअंक्षपसुगमेल ॥ १० ॥ कुशमवामगंधतगरागपुष्पारो
नवरधूप । हिमहिमाशुलेपनविविधपणअंक्षपसुगरूल ॥ ११ ॥ उत्तमगपुरमनोहार
ससुधापानररागकंत । पुष्पउदेभोगेअगरभापेश्रीभगवंत ॥ १२ ॥ सुगरापरशतिभवि
पाकेमृदपटसेजसुपोन । सुरसफर्संअंक्षपरमेलहेपुलागिनगीत ॥ १३ ॥ मनसुगरा
दानमांदतानघननिलासहूलारा । नलत्राकमदूगणराहितगागासुगणरगारा ॥ १४ ॥
जोगिंश्र यमयविपयसुपसुरभोगनिरपेत । मुणिनाहिगंक्षतयिनभजनगनगमारादित
॥ १५ ॥ मत्तगयंद छंद ॥ उत्तमउत्तमसाधारागरागनगंजनभिगानभएहे । ऐसा
वृतीमुनिसयकश्रानकउत्तमसारपुरफलगणहे । मध्यमभेदश्रनेककरीतपदेगपहूंनिष
माहियएहे । कष्टश्रकामसुभायनिर्षमरदेगजपिन्नकियासलणहे ॥ १६ ॥ फांकरफंट
कपंकरजादिकनोवश्रपायनशोकनहींहे । पश्नपंपिपशुनरनारिकिमोयि कि परेव

सुरयाविधश्रीजिनराजकहाई ॥ १७ ॥ भूमिभलीवरुणादिचहूसुभादव्यसुमानाव
मानप्रतापी । वृक्षलताकुसमाकरकाननदेवरमैसुभरूपकलापी । सीतलमिष्टसुगंध
तनीरभरीकमलायुतकेतकवापी । सैलसरोवरकेतकदेहरयारचणादिवमैविधथापी ॥
॥ १८ ॥ तसनसीतलविघ्नकछूतिहश्रंवरमाहिविकारनकोई । मारतमंदसुगंधमईजि
हरुत्तवसंतसदासुपढोई । धामलगैनगसूरससीकुजसोममईजकवीशनिहोई । पुन्न
विपाकरमैदिवमेसुरश्रीजिनभापतनिश्चतसोई ॥ १९ ॥ ऊचविमानदिपैमणिमोतिय
वर्णवितानअनूपमुहाई । सव्दमनोहरदुंदभिघटणकोवरनाटकगीतरिझाई । गंधज
हावरमालप्रसूनसुगंधतचारसुधूपधुपाई। भोगविलासविपे वविधागतिश्रायुनजानत
पुन्नकमाई ॥ २० ॥ थंभघणेनगहाटककेमुकतामणिकंचणगुंथतजाली । क्रांतमणी
कविसींसनकीवरकेतुपताकमसाथविसाली । भीतवचित्रसुचित्रमईवलसिद्धपुरीन्नित
कौतिकवाली । ताहिविपेविविधासुपभोगनपूरणइंद्रयपंचरसाली ॥ २१ ॥ गर्भनसे

ब

जविपेउपजेतनपूरणएकमहूरतमाही । गंधतस्वासकरीटसुकुंडलहारसुभूणसोभतबा
ही । अस्तनरक्तनमासमईतनरोगजराअंगहीनतनाही । फूलकिमालसदाविकसी
सुरनाकविपेउलसंतसदाही ॥ २२ ॥ जोवनवंतसुभंतसदामनवंछतरूपसुवैक्रियसाजे
नींदनहीपलकानलगैनाहिआलसप्राक्रमवंतसुछाजे । कौलअहारनहीमुपमेलनवास
एलैत्रपतेअतिराजे । पुन्नमहातरुकेफलभोगनलिंगत्रियापुरुपाविववाजे ॥ २३ ॥
भूमछूहेनचलेनभमेअतिपिप्रगतीमितकौनपछाने । कारजासिद्धकरेमनकेवलऔाथध
रीतिहुकालकिजाने । एकतिकाढअनेककरेतनतेवहुभांतकिकौतिकठाने । पुन्नाकिये
फलभोगतहैसुरयाविधश्रीजिनराजवपाने ॥ २४ ॥ वीरजरक्तविनारसमैथुनस्वेदनपे
दनहीजिनपाया । मैलनहीश्रुतलोचननाकजिभातनकीनहिदीसतछाया । श्लेपममूत्र

वंदना
॥ ५ ॥

[illegible]
क । विकलंपिवसुमध्यमश्रोलकगंधश्रंगपरसावकसुनीकें ॥ २६ ॥ मूलशरीरसुमान
नमूरतउत्तररूपश्रनेकधरैया । श्रस्वगजादिकरूपघणांविभस्वांमिकिश्रागणाकाजक
रैया । मूलतिसूपमसूपमनेसुरकोतकभांतश्रपारदिषैया । चितहुलासकलोलकरैसुर
भीनसुनाटकताथइथैया ॥ २७ ॥ भूमगहारसिपीजलकाननसर्वनिगमतिरांकनकोई
श्रंवरजातपतालधरोतिरछेश्रगछेसुखपेसुरसोई । जंतकिनेहश्रनेराकरेनिरजीवविषेथ
सजीवसुहोई । सकश्रनेकअनंतपराक्रपुन्नतरोवरकोफलजोई ॥ २८ ॥ वाहनदेवण
कगजगांहयसिंहकुरंगतथामहिषंगी । मोरमरालफणीगरुडामरएकणकेनरस्वानसु
रंगी । श्रौरघणाविधरूपधरेसुरभूषणवस्त्रसजीछविचंगी । यानविमानचडेबहुसोभत
भावनजैनपतीसरवंगी ॥ २९ ॥ विंतरभौनपतीसुरजोतिककल्पतहूंलगहैवनदेवी ।
तांनिगमागमश्रग्रमलोमनश्रद्भुतलोचलफेरसवेनी । आदिकिकल्पनिमोद्कहैविपमे

[illegible] मुनिभापनहैजिनश्रागमसेवी ॥३०॥
[illegible] । रूपनिधीरतिकेलविधीगुणधाम
[illegible] । [illegible] मनसांडममैथुनसेवी । कामवली
[illegible] । [illegible]
[illegible] ॥ ३१ ॥ कामविकारफूरंसुरकोजवकोऊरमे
[illegible] मगणकावरणीसो । वैक्रयकीरचणा
[illegible] । [illegible] भोगविलासकरैसुरशक्तिलईअपणीकर
[illegible] । [illegible] उपजेजिहमाही । होतअलंकृतदू
[illegible] ॥ ३२ ॥ [illegible]
[illegible] । ज्ञानकलाजिनसायसभाजिहपुस्तकरत्नविरा
[illegible] धर्मकहादी ॥ ३३ ॥ राजसभा
[illegible] । [illegible] सभ्याय इरेश्वरई
[illegible]

कर्मानुमोदनमानिदृष्टानि ॥ ३४ ॥ गजगिरिगमनित्यगतिकेवलज्ञानमरूपनकुंदिसमा
गी । चक्रकृपाणपद्मनवनिधिनवपणकृतारणृतिमकल्पाणि । नवतत्त्वणीनिधगतरंजगुणना
सरमानकोपविचारी । जनरंभमवलिकतसकीनिजवातकिपानमद्वाहितकारी ॥ ३५ ॥
आगमश्रुतिकितमहेमतरुणंतरणीगमात्रीयोगी । तांत्रमहेमसमध्यमकेतिनतेगुर
श्रेतपतिकरजोगी । तांनिवणकुतवीनकर्तुकुहामनिवामविपावनजोगी । देवसभा
विवनाविकर्तानपापकरीमानपूजनजोगी ॥ ३६ ॥ मानवचैतकर्णभक्तिजिनर्थगव
गिरवरागमपाहि । पुजनकरनानंगजतोविनयायसमाभुधानकनाहीं । धर्ममहा
तपजानमणानुकृतामविवारकरेसुरनाही । औरतहाअटकाउनहीसुरकामकलोलकरे
तिनमाही ॥ ३७ ॥ श्रवश्रणीगजवाहनकीरथकेधुजकीसुरपायकजोहे । पंचमगो
मरणीपुजवाइनपूरणपंचश्रणीगुणमोहे । पष्ठमगीतकल्पारमपूरनमानमनाटककेरस
मोहे । गानअणीगुनलपतिमभजैनमतीजिनआगमसोहे ॥ ३८ ॥ जअसलोकतिउ

॥ ७ ॥

रधकेसुरऊरधचालविपेअतिगामी । देवपतालकिवासककीअधुमाहिमहागतिभापत
स्वामी । सातअर्णविचपंचकेसुरऊरद्धकेदृपभाध्वुजनामी । हेठकिदेवकहेमहिपाध्य
जजैनकियेनमहासुपधामी ॥ ३९ ॥ वितरभौनपतीवहुऊरद्धजोतिकऔधवडीतिर
छानी । देवविमानअधोदिसकोवहुऊपरआपनकेतुलगानी । औधजाधिन्नवनेभवने
उंतकिपटअनुत्तरपंचविमानी । दवंतिपेअतिकालतिभावतिभेदअसंपकहेजिनवानी ।
४० ॥ कलपदुहूंसुरआदिमहीअगलेविवदूसरतीसरहीइम । सातमआठमहीचहु
रतपंचमकलपपरेचहुकेतिम । पटमिपटकहेअहिमिंदाकिसातमतीनपरैतिनकेजिम
हेठसभीकछुऊणअनुत्तरचारकिपंचमकेसमहीपिम ॥ ४१ ॥ वितरजोतिकइंद्रनतेभ
वडीथितधारी । तांतिमहाबलप्राक्रमरिद्धविमानपतीवरइंद्रविचारी । चौस
वरऊरधअचुतइंद्रादिपैगुणभारी । सोजिनराजकिपायलगैकरजोरनमेस्तव
। ॐ कपता रुजीअणर्धाधिपतीअभिजोगी । अंतर

रठाकरलीगी । यारचनासुरकल्पळगेउपरेश्रहिमिंदमहासुपभोगी ॥४३॥ एकसुसव्द
श्रनंतसुकर्मकिश्रसंपपायनवितरइंद्र । दोधरणादितिहुंश्रसुरिंदचहुंग्रहतोसतपंचरवि
न्द्र । एकदुत्रयचतुकल्पदुगेदुगपंचसहंसचहुंकल्पिंद्र । लापद्वकोदुतहीचतुपंत्रयये
त्रिकचोदिवन्तंतश्रानिंद्र ॥ ४४ ॥ वङ्कतिवन्त्रनंतगुणासुपदेवजाघिन्नतेवित्तरइंदा ।
तांतिवडोधरनादितिसो असुरिंदतिसोग्रहतोरविचंदा । कल्पदुगेदुगश्रटमलोचतुकल्प
सुरात्रकत्रयश्रहिमिंदा । चौविजयादितिसोलवसत्तमगासुपभोगनवेनजनिंदा ॥४५॥
चौसठइंद्र श्रनुत्तरकेसुरश्रीजिनसासनबोधकदेवा । छप्पनगोकुमरीजिनजन्ममहोत्स
वकीकरणीसमसेवा । यापदवीसभपावनहारलहेजियभव्यश्रभव्यनलेवा । भव्यश्र
भव्यदुहूंविधकेसुरभापतसाधुमहाश्रुतिभवा ॥ ४६ ॥ भव्यजिनागमवाकसुनेचितग्र
दागउठचरचामनलावे । सम्यकबोधलहेनरहोव्रतधाराचिंद्रूपकिजोतापिंडावे । स्वर्ग

विमानविपैसुपभुंजतमानवहोइमहामगधावे। केवलपायभवेशिवपूरणसम्यकवोधग्र
भव्यनपावे ॥ ४७ ॥ जीवअभव्यकठोररिदाछलछिद्रमृपामतिग्रघगवारी। सम्यक
चांदनज्ञानमहारविसैलगुफातमभीतविकारी । आगमग्रंगग्रनिटलगैविपरीतविपे
चितकीछतधारी । मोपकदाचलहैनरहैजगहैभवसागरकोग्रधकारी ॥ ४८ ॥ भव्य
ग्रभव्यसमासमदिठकिसुल्लभवोधकिदुल्लभवोधी । ग्रंतभवीविनग्रंतभवीपरजापर
जापतिसीतलक्रोधी।देवग्राराधिकग्रौरविराधिकवैरनिवारकनित्तविरोधी। धर्ममतीग्र
घधादुविधेसुधसाधुवपानतहैश्रुतिसोधी ॥ ४९ ॥ ऊरधमद्यपतालविपेतिरछेत्रहुवा
रघदीपनिवासे । त्रैविधसोगुणतीनमईसुरतीनहिकालअनंदहुलासे । सम्यकामिश्र
मृपात्रिविधेचितभावमईत्रिदशापरगासे । त्रैपदभापकत्रैभवनेश्वरवाककहैसुनियोग्र
[illegible] ॥ ५० ॥ [illegible]सम्यकवंतसज्ञानधरीजिनमारगरीझरहेहै । साधुसुश्राव

ते । केसुभसंगतितेसमतागहित्यागमणामतिधर्मगहेहै ॥ ५१ ॥ एकसदाथिरचित्त
सुशांतिअनिछतउत्तमभोगरमंते । एकनकेरितचाहिलगीरतिकामकतूहलफासफसंते ।
एकगंभीरअलोलविचक्षणएकमहाचपलातिहसंते । यछतचंदनपूजनकोइकदेवनहीं
इहचाहिधरंते ॥ ५२ ॥ एकनहीअतिसीतलकोमलमिष्टसुगंधसुउज्जललेशा । एक
नदेवनकेसुभपक्षधीउरअंतरभावनवेशा । सुंदरतेजसरूपभलीविधकेतनकेचितरा
जतपेशा । तीनभलीसुभभावमइंचरणीजिनराजसुधर्मधरेशा ॥ ५३ ॥ एकनदेवनके
घटअंतरदुष्टमतीअधिकारकलेशा । हिंसकभावकठोररिदाछलछिद्रअधर्ममइंउपदेशा
रूपरुतत्तमहाकटतीपणपोलहटीफलगेजिमतेशा । नीचकुगंधकुरूपमइंअतिकालछ
बीइमकालकलेशा ॥ ५४ ॥ एकनदेवनकेदुरबुद्धदशादुपदायकनीलमइंहै । एकनके
उरदंभदशाअधलोभसमेतकपोतथइंहै । तीनाहिनीचकहीवरणादिकतेअरुभावतनी
चगइंहै । मूलमइंवरणीप्रभुएकसुएकविपेपटभांतमइंहै ॥ ५५ ॥ वर्षहजारकहीदस

आयुजघिन्नवडीतवतेतिससागर । मध्यविपेवहुभेदश्रसंपकहैजगदीससुज्ञानउजागर
श्रायुवडीतिमहीदुतिशक्तिगतीवलप्राक्रमश्रौधगुणागर । वैक्रयवुद्धविचक्षणतासुपंश्रा
दरारिद्धलपोमातिश्रागर ॥ ५६ ॥ श्रायुवडीगुणतेश्रधिकेइकएकवडेपदवीगुरुपाई ।
श्रंतमश्रायुलईसुरतेइकनूतनारिद्धलईश्रधिकाई । सम्यकधर्मकरीअधिकेपरिलोकल
गैजिहधर्मसपाई । सर्वगुणेश्रधिकेसुरउत्तमहैसरवारथसिद्धसहाई ॥ ५७ ॥ इंद्रयपंच
त्रियोगमईदसप्राणमईत्रयज्ञानत्रिदंसी । चारकपायधरीपटलेसकिएकसंठाणसमोच
उरंसी । दूसरकल्पलगेकरसात्ततनूतिनऊपरघाटघटंसी । श्रोडकहाथतिघाटश्रनुत्तर
महिजिणंदकिवेननिसंसी ॥ ५८ ॥ भूपलगैजबदेवनकोतबहीसुभगंधमईरसवाले ।
उत्तमदवैकिवासनलैकरतपतिकरैचिंतरूपरसाले । श्रायुजघिन्नकुएकादिनंतरवर्पसहं
सगिनामरनाले । पुकिश्रतरभेदघणीविधजैनकिवेनमहाभ्रमटाले ॥ ५९ ॥ उत्तम

भीसुरलेवे । उत्तमनीनहुहूंविभकेकहिलेतअहारगुणीसुखदेवे । सर्वविकारमिटैसुरनि
श्वलसोप्रभुसिद्धसदाकविसेवे ॥ ६० ॥ चाहिनहीगमनागमनेकहुल्लच्चनफोदननुक
कपाई । कामविकारकुनामनहीजिहराडविवादउपाधनकाई । साथसंयोगनियोगन
हीजिहसीतलभावसदाहरपाई । पोहल्लहीरविआदिअनूपममध्यरभेअहिमिंदगुहाई
॥ ६१ ॥ जोअतितृप्तिभण्नहिचाहतभोजनतोविषयादिअचाही । नृठमहासुखमेपर
मोदलहैअहिमिंदरहेनिजठाही । चाकरठाकरकोइनहीभयनजेसुखेदकहेगुणग्राही ।
द्वादसकल्पकिऊपरराजतयारचणावरणीशिवराही ॥ ६२ ॥ पंचअनुत्तरमाहिसदा
थिरसम्यकदृष्टमहासुपकारी । हेठनवेपुरमाहिदुधासुरसम्यकवंतमृषामतिधारी ।
जोजिहदृष्टसदाथिरसोहनमिश्रदशातिहनाहिउचारी । यारचनाअहिमिंदपदेजिन
राजकहीगणधारविचारी ॥ ६३ ॥ जोअहिमिंदतणेचितमाहिउठेजवप्रश्नतदुत्तरभा
वे । जोजिनकेवलिकोधरध्यानरिदेविचप्रणकरेमनलावे । केवलिधाररिदेविचउत्तरदे

तसुज्ञानकरीसुरपावे । आवनजावनरीतनहीनिजठामरहैचितमैगुणगावे ॥ ६४ ॥
देवविमानअनुत्तरकेचितउत्तमसम्यकऔधसुज्ञाने । दर्वअनुत्तरभावअनुत्तरआगमवो
धअनुत्तरध्याने । पुन्नअनूपसभीसुरऊपरआगममैनवजन्मसुथाने । सत्तसुभावदया
लरचेशिवसाधिकहैजिनवैनप्रमाने ॥ ६५ ॥ सिद्धभएसभअर्थजहासरवारथसिद्ध
विमानकहावे । आयुवडीउतकिष्ठतथासुपसर्वसिरोमणिदेवसुभावे । एकलहैभवना
नवकोवहुरिद्धलहैफुनसंयमपावे । केवलज्ञानलहीशिवपायकिसिद्धभएजगफेरनआ
वे ॥ ६६ ॥ पंचमिसंपअसंपचहुगुणसंपकहेअहिमिंदनवांके । तांतिअसंपगुणेकल
पेतियसंपगुणीविवकलपसुरांके । तांतिअसंपगुणेभवनेतियसंपगुणीसुअसंपवनाके ।
वितरनीसुरजोतिकजोतिकनीगुणसंपातिसंपसभाके ॥ ६७ ॥ जानतहैइमकालसमा

वलवंतकिफेरी ॥६८॥ तारिकुरूपचलेतिहुकारणवैक्रयदेवकरेजनकोई । मैथुनभोगकि
भोगनतेअरुठामतिठामचलेजवहोई । देवकरेविजुलीदुतिगर्जतवैक्रयमैथुनमेंवलठोई ।
साधुमहातपकोअपनावलआक्रमारिद्धदिपावनसोई ॥ ६९ ॥ आवतहैइतिकल्पलगे
जिनराजमहोछविकारणदेवा । वंदनपूजनपूछनकोमुनिकेतपकीमहिमालपसेवा ।
मोहकरीलपसाथपुरातनवैरकरीरिसरूपधरेवा । मंत्रआराधनध्यानकृयानरलोककि
पेसुरआदभवेवा ॥ ७० ॥ देवभएततकालचहेनरलोकमिआवनआयनसके । जेहु
तिलोकपदारथमुर्छतकारणतीनसुनेगुरुवके । प्रेमभयोउतलोकविपेहितहृदगयोइतते
चितचके । जाववहीकुछकालरहोइमचिततकालगएवहुतके ॥ ७१ ॥ देवसनूहसु
साथभयोललनाजनमाहिमहारसपाई । मानवलोककिकारजकोचितचाहिमिटीथिर
तातिहआई । घोरकुगंधअपावनहैनरलोकइसीलपचाहिमिटाई । याविधआवतना
हिईहासुरकारणतीनसुनोचितलाई ॥ ७२ ॥ जोहुयमुर्छतआवनचाहतसोतिहकारण

निश्चितआवे । जासप्रसादलहेसुरसंपतितेगुरुपूजनवंदनधावे । घोरतपीमुनिदुःकर
कारकतेमुनिकेगुनआयदिपावे । मोहिरह्योजिसमातपितासुतनारिजनादिकमैहित
लावे ॥७३॥ तीरथनाथकिजन्मसमैरिपहोवनमैअरकेवलपाए । लोकउद्योतप्रमोदम
हासुरसंगमहासिंगारसुहाए । देवकरैसिंहनादकतूहलहासविलासहुलासवढाए ।
चैतकव्रक्षचलेइहिलक्षणचित्रमहारसस्वर्गदिपाए ॥ ७४ ॥ आसनइंद्रनकेजुचलेतव
औधधरीतिहतेइमजाने । तीरथनाथमहोछवहैतिहजायकरोजिनभक्तिसुथाने । आ
सनछाडनमैविधसोप्रभुसन्मुपहोइवहूसुभध्याने । फेरसिंहासनआयसजेनरलोकमि
आवनवेक्रयठाने ॥ ७५ ॥ पायकस्वामिवुलायकहैवरघंटणकोघणघोरकरावो । हो
यतियारसुरेललिनादिकरिद्धसमेतप्रभूढिगआवो । तीरथनाथमहोछविहैइहिवातसु
स्वर्गविपेप्रगटावो । नाथकिसाथचलोधरभक्तिमहानिजरासुभवंधनधावो ॥ ७६ ॥
जिनभक्तिधरीचित केइमहोछवदेपणकारण ॥ वंधनपुजनदंसणदेपणअद्भुत

नहीजुतदेवदसोदिसतेसमकालचलेसुभचारण ॥ ७७ ॥ सर्वसुरिंद्रसमागमदेपणना
टकगीतवजंत्रउमाही । अद्भुतवेक्रयरूपकतूहलहासविलासविनोदउछाही । नाथकि
साथसुमीतकिनेहतेकेइलपीनिजराचितचाही । इंद्रनकीसिरआनधरीइमदेवअसंपस
मागमठाही ॥ ७८ ॥ केइहसेगुटकेउछलेसिंहनादकरेगरजेघणघोरे । केइभिडेभभ
केदवडेबहुबोलकरेउमगेचहुओरे । एकसुएकमिलेमुसकावतहासविलासविपेचितजो
रे । याविधश्रीजिनराजमहोछविमाहिरमैसुरऌंदकरोरे ॥ ७९ ॥ यानिसमातिकिकु
क्षवसेप्रभुदेपउठीसुपनेदसचारो । सोमसुलीलतपुन्नकेतुपतीउपआयसुनायविथा
रो । कुंजरगोहरिश्रीअजसूरससीधुजकुंभसरोवरसारो । पीरनिधीमणिरासविमान
किभोनसिपावनधूमउदारो ॥ ८० ॥ जाजननीजठरेप्रभुआवतओधधरीसुरशक्ति
लहेहै । भक्तिकरीप्रणमैविगसैविंतरादिकुवेरबुलायकहेहै । भूमिनिधानपुरानमहा

कू
सोतिरजंभककोकहिकोगतिसुद्धकरैमनमोदलहेहैं ॥८१॥
धनश्रीजिनमंदरमेलचेहेहैं । सोतिरजंभककोकहिकोमतिसुद्धकरैमनमोदलहेहैं
दोहिलकारमनोंरथमातकुपूरणहोतप्रमोदधरेही । जोविनदेवनपूरणहोततवेसुरश्रा
यकिसिद्धकरेही । भोजनपानसुगंधभलेकुसमादिप्रभूग्रहमाहिभरेही । रुत्तसभीसम
हीसुपदायकगर्भकुपोपणदोपहरेही ॥ ८२ ॥ श्राठहिश्राठअधोदिसऊरधपूरवदक्ष
णपछमउत्तर । मध्यकिचारचहूविदिसापतुछप्पनगोकुमरीभवसुत्तर । श्रीजिनजन्म
भएधुरश्रावनवंदनमातसमेतसुपुत्तर । श्रावनरीतसभाकरकारजगावनगीतअनूपन्न
नुत्तर ॥ ८३ ॥ तीरथनाथकिजन्मभएमघवाघरश्रायसुमेरलियावे । सर्वसुरिंद्रमिले
तिहमज्जनश्रादिकरायजिनंददिपावे । सर्वविधेकरवंदनपूजननूतनस्तोत्ररचेगुणगावे
फेरघरेपहुचायसचीपतिसर्वसुरिंद्रनदीसरजावे ॥ ८४ ॥ आपनश्रापनथानकश्रीजि
[illegible]किविवकवंदन । पूजनभक्तिधरीरचनाटकगीतसुछंदप्रमादनिकंदन । हो
[illegible] तथा

भ्रकजायगुनदन ॥८५॥ श्रीजिनराजवसं...

अलेपतथाप्रभुराजतदेवसभेप्रभुसेवकरेही । देसविदेसाकिदर्वश्रमोलकश्रीजिनमं दरमाहिभरेही । तीरथवर्त्तनकालछपीसुरवोधकआयनभंतपरेही ॥ ८६ ॥ आठहि लापसभेतकरोरसुनैयनकोदिनएकदतारे । सोडकवपंदियोजिनहीनरभव्वलहेजिह पुन्नउदारे । श्रीमघवादिसुरिंद्रकरेतिहकारजकीरतपुन्नपसारे । चारहिजातिकिदे वकरेकुलभाक्तिविपेमनउछवभारे ॥ ८७ ॥ छाडअगारसजेअणगारपदेतवदेवपतीस भआवन । मजनआदिसभीविधसोकरभूपणवस्त्रसुगंधलगावन । रत्नमईशिवकासु सिंहासणनाथविठाय्किइंद्रउठावन । छाडपुरीवनमारगमेचलवृक्षअशोककिहेठठ रावन ॥ ८८ ॥ तौउतरेशिवकातिप्रभुपटभूपणत्यागकिलोचकरेही । इंद्रगहेकच पीरसमुंद्रमिपायसुभक्तिकीरीतधरेही । श्रीजिनधारमहाव्रतसंयमशांतदयारसपूर भरेही । केतकभव्यविरागचढेतिहसाथशिवोतमपंथपरेही ॥ ८९ ॥ मोदतदेवकरें

...रचणा ॥ १९ ॥

प्रभुसेवमुखोजयकारमहारिवहोई । रूपअनूपकुकोइकरेजसत्यागविरागअसंगकु
कोई । शांतदयालअगाधमतीप्रभुमारगमोपचलावतसोई । देवकरैजसमानवसंघस
मेतरमैप्रभुसोमनढोई ॥ ९० ॥ सर्वसुरिंदनरिंदजनादिमहामहिमाकरपायलगैहे ॥
इंद्रनदीसरजायकरेदिनआठमहोछवप्रेमपगेहैं । फेरसुथानकजायरमेनिजभोगवि
लासहुलासजगेहैं । जोजिनरायकिसेवकरैजियठागमृपातिनकोंनठगेहैं ॥ ९१ ॥
धारतपीप्रभुपारणकेदिनभिक्षलहैंनरनारिदतारो । दुंदभिनादकरेविवधाजयकारअ
होइतदानउदारो । द्वादसअर्द्धकरोरसुनैयनकीवरपानभवादलसारो । नीरसुगंधअ
सूनफलादिकवृष्टकरैचितभक्तिअपारो ॥ ९२ ॥ केवलज्ञानप्रकासभयोसभइंद्रमहा
महिमाहितआए । होइविनीतलगेचरणीकरजोरटिकेचितभक्तिभराए । वेनपयूपसु
धर्मकथासुखदायकश्रीजिनराजसुनाए । जीवअजीवपदारथनिश्चितलोकअलोकाकि

ऐरावतगनादकगीतप्रभूपगवंदे । अष्टमदीपनदीस्वरजायमहोछवमांप्रमादिनि
कंदे । फेरसुथानकजायरमेंनिजपून्नप्रभावरमंतसुछंदे ॥ १४ ॥ ठामतिठामविहार
करेप्रभुतीसुरभक्तिदसीविधधारे । श्रीजिनदोपगधारतिहांतिहहेठजिमीसमदेवविधारे । कंटकहेठप्रणीजुकरेजयकारमहारिवछंदउचारे । संपनघंटनकीघणघोरवजे
नरसिंहसनादनगारे ॥ १५ ॥ तीरथनाथकिकेवलिधारकिदुकरकारकिदंसणकारण ।
चंदनपूजनपुछनकेहितआवनदेवसदोपनिवारण । एककठेवहुसाथलिएकवहूपरवार
सजोछविधारण । जाचनबोधनसाधुसुश्रावकसंयमकोफलरिद्धदिपावण ॥ १६ ॥ कर्म
निवारसरीरकुत्यागभएनिरवाणप्रभूशिवमाही । आसनइंद्रनकेजुचलेसभआवनतो
जिनकेछिगताही । चंदनमज्जनरीतकरावनलेपनवस्त्रउढावनचाही । वर्जतहासविनो
दनिगोनगीनीरझरेद्रमरूपउछाही ॥ १७ ॥ तेतनकोशिवकापरचाढकिचंदनकीचित
कापरल्यावे । इंद्रकिवेनसुअग्निजलावतवायुकुमारसुवायुलगावे । मेघकुमारसुशांत

करैमण॥दिकाँगगुनेसुभभावे । धूजवनायनदीसरजायमहोछ्वपूरसभीघरजावे।
॥ ९८ ॥ दोहरा ॥ मानवचैतकथेभमैठीकिधरेजिणंग । अर्चसुगंधसुधूपदेनमेरमेनि
गरंग ॥ ९९ ॥ मालती छंद ॥ सकलदुपविनासी पारसंसारवासी अचलअज
रूपी कर्मवरजीअनूपी ॥ १०० ॥ सकलजगतस्वामी सर्वलोकाग्रठामी जयजय
जपसिधासेवतेइंद्रवुद्धा ॥ १०१ ॥ दोहरा ॥ वडेदेवताजगतमे तातेउत्तमइंद । सो
जाकीसेवाकरै प्रणमोदेवजिणंद ॥ १०२ ॥ इहिविधरचणादेवकीकहीवुद्धअणुसार ।
अवगरणोकछुऔरभीसूनोभवकनरनारि ॥ १०३ ॥ भिन्नाभिन्नवरननकरोजातजात
कोरूप । यातेवाढ्ज्ञानवलश्रीजिनवैनअनूप ॥ १०४ ॥ रत्नप्रभाइकपांथडेतेअंतर
निवास । देवअसंपभवनपती मणिउद्योतपरगास ॥ १०५ ॥ ओडकदक्षणासिंध
दुग उत्तरमडेरीदेव । सोढअपपलअियाधितसाढेचारनिहेव ॥ १०६ ॥ शंकरछंद ॥

दुविधिअसंपडआर ॥ १०७ ॥ सुरतावतीसतेतीसउत्तमअग्रमहिषीपंच । चतुलोक
पालत्रिपर्षदायुतप्रवलसुकृतसंच । वहुदेवसहंससमानकीयुतदिपतचमरवलिंद ।
अणकाधिपतियुतसातअणकाअसुरपतिविवइंद ॥ १०८ ॥ वरभवनचारआसित्तलापे
वस्तनागकुमार । तनवर्णपांडररतनवतसुभवस्त्रनीलेधार । सिरमुकटफणिवराचिहन
सयवरदामभूपणवंत । धरणिंद्रभूतानंदविवदिसइंद्रअतिसोभंत ॥ १०९ ॥ सुरला
वसत
पवहत्तरसुभवनेश्वरस्वर्णकुमार । सुंदरसुकंचणकांततनासिरमुकटगरुडाकार । सित
चीरभूपणगंधउत्तमइंद्रवेणुदेव । वरवेणुदालीदूसरोजिहकरतसुरवहुसेव ॥ ११० ॥
पटसत्तलापसुभवनवासीरक्तवर्णसरीर । विद्युतकुमारसुवज्रमूरतमुकटनीलेचीर । सर
वंगभूपणमालधारीइंद्रश्रीहरकंत । उत्तरदिसाहरसिपविराजतपुन्नफलभोगंत १११
वरभवनपटसत्तरसुलापेरमतअग्निकुमार । सुभरक्तिमणिछवितनविराजतवस्त्रनीलेधार
कु

देवरचणा
॥ २४॥

सिरनुकटकलससुलछणीभूपणसुगंधसुमाल । तिहग्राग्निशिपत्र्प्ररुप्रमानवइंद्ररूप
रसाल ॥ ११२ ॥ सुरवृंददीपकुमारतनछविरक्तरत्नसमान । सुभनीलवर्णसुचीरसुंद
रमुकटसिंहवपान । वरभवनलापछहत्तरेवसरमणाचितउलसंत । विवइंद्रपूरणग्ररुवि
शिष्टोनामकथितसिद्धंत ॥ ११३ ॥ इमदेवउद्वतकुमारपांडुरवर्णतनसुभकंत । सिरतु
रंगचिहनसुमुकटसुंदरनीलचीरसुहंत । वरभवनसुंदरपटसत्तरलापमाहिनिवास ।
जलकंतजलप्रभुइंद्रविवसुपभोगपुन्नप्रगास ॥ ११४ ॥ सुरहेमवर्णसुचीरधवलेमौल
गजवरकंत । वासीछहत्तरलापभवनेविपेसुपभोगंत । इसभांतदिशाकुमारत्रिदसासुर
पतिगुणवृंद । वरग्रामितगतदक्षणदिशामिनवाहनोत्तरइंद ॥११५॥तननीलवर्णसुकां
तदीपतदेवपवनकुमार । वहुरंगचीरसुगंधभूपणमुकटमकराकार । पटनवतिलापसुभ
वनवासीइंद्रदोवलवंत । वेलंवइंद्रतथाप्रभंजननामकथितसिद्धंत ॥ ११६ ॥ वरभव
न लापन्न ... हे... इसंतमेघग म र ... न मउविसिनचीरमुकटेवर्द्धमानउचार । सुभना

...नजान । आनिहांधाचचाणदशजतपुन्नारकत्रवान ॥११७॥
उदगाधिनगनीकायसुरथितदुविधओडकहोद । दक्षणदिशापलडेडकीदसुन्नउत्तर
दोद । पलपौनअरुदेसूनपलदोमहाथितजान । सभभवनवासीदससहंसजघन्नवर्ष
प्रमान ॥ ११८ ॥ दसजातावेंशतइंद्रअतिवलमुकटकुंडलहार । सर्वांगभूषणमाल
अवरजोतंतजउदार । नितमुदतहासविलासतरुणीसाहितचितउलसंत । जिनदेववं
दनपूजनेअतिभक्तिरूपधरंत ॥ ११९ ॥ मंत्रीसमानीअग्रमाहिषीसैनपातियुतसेन ।
चतुलोकपालत्रिपर्षदायुतरक्षसुरसुपदेन । सजचारयानविमानमणिमयआयवंदन
देव । जैजैजिनेश्वरदेवकीजिहकरतसुरबहुसेव ॥ १२० ॥ दोहरा ॥ जातजातदक्ष
णथकीउत्तरघटलपचार । संपअसंपप्रमाणमितजोजनभवनविथार ॥ १२१ ॥
इति भवनपती संपूर्णम् ॥ अथ वाणव्यंतरवर्णनं दोहरा ॥ रत्नप्रभामणिकंड
मेसंसेजोजनत्याग । हेठउपरविचपोविषेविंतरसुरवडभाग ॥ १२२ ॥ सवेया छंद ॥

चिहनपिशाचकदमवृक्षकेरोसूलवृक्षकोभूतिधरंत । यक्षणगोधपटशपसनोकिंन्नरवृ
क्षअशोकसुहंत । चंपककिंपुरुषाकेमुकटेनागमहोरगजातदिपंत । गंधर्वकितूंबरतरु
कोविंत्तरलक्षणकथतासिद्धंत ॥ १२३ ॥ यक्षपिशाचभूतगंधर्वाशरपशामतनछाविसो
हंत । राक्षसकिंपुरुषाधवलाभाकिंन्नरनीलवर्णउलकंत । व्यंतरभांतभांतवरणोकेची
रसुगंधसुमालधरंत । देसदेसकेवसमनोहरहासकतूहलचितहरपंत ॥ १२४ ॥ आध
पिशाचादिकव्यंतरयहिआणपाणआदिकवसहोर । सोलसजातवतीसइंद्रतिहइमप
रिवारएकइकऔर । अग्रमहेषीचारचारसहंससमानपरपदातीन । सोलसहंससरीर
रक्षसुरअणकासैनपतीपरवीन ॥ १२५ ॥ कालइंद्रदक्षणपिशाचकोमहाकालउत्तर
दिसजान । भद्रसुदिसदक्षणसरूपजोप्रतिरूपेंद्रदूसरोमान । पूरनभद्रयपपतिइति
दिसमानभद्रदिसउत्रपछान । भीमइंद्रराक्षसकुलभूषणमहाभीमदूजोपहिचान १२६

सायअरत । ओपकायदभायकायावयहमुणगमतअथरत । गातरताअरुगातजसा

विवगंधरवेंद्रसुगीतरमंत ॥ १२७ ॥ सन्नहेकसनमानीदोनोआनपानपतिइंद्रदिपंत ।

पानपतीधातादिसदक्षणउत्तरदिसाविधाताकंत । रिपइंद्ररिपपालदूसरोरिपवादिक

पतिकथतिसिद्धंत । ईश्वरइंद्रतथेवमहीश्वरभूतवादिकाइंद्रसुहंत ॥ १२८ ॥ कंदकना

थमुवच्छइंद्रओअरुविशालदुतियोवलवान । महाकंदकामहाहासजिमसुंदरमहासुं

दरगुणपान । स्वेतेइंद्रअरुमहास्वेतेविवकोहिंडकरेइंद्रपहिचान । पतगजातपतिपत

गनामकहुपतगरचेंदुदूसरोमान ॥ १२९ ॥ दोहरा ॥ ओडकसुरकीएकपलदेयीकी

पलआध । दससहंसवरपायुलघुवितरगतिवचसाध ॥ १३० ॥ भवनपतीवितर

कहैचहुलेश्यामेदेव । कृष्णानीलकपोतकीतेजसधरचहुभेव ॥ १३१ ॥ परमाधरमी

पंचदसजातअसुरमेक्रूर । दमैनरकमैनारकीरमैरुद्ररसपूर ॥ १३२ ॥ अंबेआंबरसे

कहेस्यामेसबलेजात । रुद्रविरुद्धेकालकहुमहाकालविष्यात ॥ १३३ ॥ आसिपतेधनु

धरकहैवालूकुंभीजान । वेंतरणीपरसुरंकहेंमहाघोपंपाहिचान ॥ १३४ ॥ दसविध
वितरजातमैतिरजंभकसुरहोइ । मानेआनकुवेरकीअधिष्टातालोइ ॥ १३५ ॥ आन
पानफलफूलकैलैनसैनयथ्थेव । वीजवीयुतिरजंभकासभवथ्थाधरएव॥१३६॥ वसैसैल
विजसार्द्धपरचित्तविचित्तेवास । जमकसमककंचणगिरीसदाप्रमोदहुलास ॥ १३७ ॥
गीतन्रतादिकतूंहलेहासविलाससुभाव । सुपीवेषबहुसुपकरैदुपीदुपावनचाव॥१३८॥
एकपलोपमथितलगैभोगेभोगसुछंद । निकटपेत्रचौसंधमैफिरैसुपायअनंद ॥१३९॥
तिरछेलोकअसंपपुरवनरूपीविगसंत । देवलोकवितरतणेभायेश्रीभगवंत ॥ १४० ॥
भवनेवनगतियुगलीयाअंतरदीपापाय । तथाअसंन्तीतिरयंचइंओडकतिहलगजाय
॥ १४१ ॥ होइअकामीनिर्जराभूपत्रिपादिकपाय । स्नानादिकनहिंविपेसुपवितरलघु
थितथाय ॥ १४२ ॥ [illegible] । [illegible]विपद

दिवरचणा
॥ २१ ॥

सहंसव्यंतरकेसुपत्र्याव ॥ १४४ ॥ जेउपसंतकपायकेत्र्प्रलपारभाजाव । त्र्प्रलपावना
दिकगुणसहितरहेप्रसन्नसदीव ॥ १४५ ॥ मातपिताकेवचनवससेवेत्र्प्रतिपितमाय ।
त्र्प्रायुवर्षचौदससहंसव्यंतरगतिसुपपाय ॥ १४६ ॥ छुद्दरविधवाविहरनीगुरुजनरो
कीतीय । सुपसिंगारत्र्प्रादिकरहितत्र्प्रलपारंभधरीय ॥ १४७ ॥ वृतदधपीरादिकस
रसतजीत्र्प्रल्पजिहचाह । व्यंतरनीहोवेसहंसचौसठकेथितमाहि ॥ १४८ ॥ त्र्प्रलपा
रंभीरसतजीकंदमूलफलफूल । जलसिवालभक्षीतपीज्ञानरहितमगभूल ॥ १४९ ॥
नानाविधकेकष्टकरलहैदेवगतिठाहि । भवनपतीवितरविपेत्र्प्रोडकजोतिकमाहि १५०
फलत्र्प्रकामनिर्जरातणेपंचिंद्रीतिरयंच । भवनपतीवितरतणेभोगसुपविधपंच॥ १५१॥
ह्वांत्रेसतवितरतणेइंद्रसहितपरिवार । सेवेश्रीजिनदेवकोमनवचतनसुचधार ॥ १५२ ॥
ससिरविग्रहरिपतारकाचरथिरदसविधहोइ । मनुजपेत्रसंक्षातचरपरेत्र्प्रमितथिरजोइ
॥ १५३ ॥ इकससिरविपरिवारहैग्रहअठासीदेव । रिपत्र्प्रठाईतारकाकोडाकोडीएव

॥ १५४ ॥ सहंसछिहाठनवसयापणहत्तरपरमान इकसौवत्तीगुणसभीचरचंदादिक
जान ॥ १५५ ॥ दोचतुवारवियालफुनविवसत्तरचंद्रादि । जंवूपुहकरअर्द्धलगदीवो
दहीअनादि ॥ १५६ ॥ इकसुमेरकेपुव्वदिसदुतियोपछमहोइ । इमदक्षणउत्तराफिरे
चरजोतिकगुणदोइ ॥ १५७ ॥ इकगणकेविवभागहैनिश्चिरदिनचररूप । इमविव
दिसनिसहीरहैविवदिसदिनरविभूप ॥ १५७ ॥ इसपेत्रेतऊचइममहाजोजनेजान ।
तारेसगसैनवततेनवसयलगपहिचान ॥ १५८ ॥ रविअठसैससियुतिअसीरिपतांते
युतचार । भरनीनिचेसवनतेस्वातीऊपरवार ॥ १५९ ॥ अभिजितअंतरसवनतेसभते
वाहरमूल । मूलाद्रातेअयणगतिदक्षणोत्रविवतूल ॥ १६० ॥ उत्रापाडाश्रवनकेसंधे
अभिजितहोइ । राजासर्वनक्षत्रकोवहुफलदायकलोय ॥ १६१ ॥ रिपतेवुद्धचहुजो
जनेतांतेतिहुतिहुचार । सितगुरुकुजशनिक्रमचतुरजोतिकचक्रविचार ॥ १६२ ॥ वार
[illegible] ॥ १६३ ॥

तासअसङ्करासकपदात्रभागयुततान । [illegible] ॥
॥ १६४ ॥ रवितेससिकोअंतरोद्वादसअंसकिताय । सितएकमचोवीसलगहुतिया
अंतलपाय ॥ १६५ ॥ थित २ द्वादसअंसङमपूर्णमलोपटरास । रवितेससिससिते
रवीसमपापंतपरगास ॥ १६६ ॥ कृष्णपक्षतातेपरेतिथतियद्वादसअंस । सूरचंद्रङक
अंससेअंतअमावसचंस ॥ १६७ ॥ पटपटअंसकेकर्णइकरवितेससिलगथार । ध्रुर
केतुथिरतापरेसातसातवगुचार ॥ १६८ ॥ ववबालवकोरवकहोतेतलगरचनजेव ।
विष्टीचरतातेपरेतीनकर्णथिरएव ॥१६९॥ शकुनचतुष्पदनागकंहुछप्पनचरथिरचार ।
साठकर्णथिततीसकेद्वादसरासमझार ॥ १७० ॥ नवजमहूरतकुलअधिकसातवीस
दिनमान । सभनक्षत्रकोफरससिफिरआवेउसथान ॥ १७१ ॥ त्रयसेपणसठदि
नगएछासठवेविरतंत । द्वादसरासीभुक्तरविफिरउसथानवदंत ॥ १७२ ॥ वामाय
णरविमंडलेसौचउरासीयुक्त । इकसैतेरासीदिवसउत्रायणइमभुक्त ॥ १७३ ॥ पण

सठजंबूदीपमेलवणोदधिमेशेप । इकसौचौरासीसभीसूर्यमंडलदेप ॥ १७४ ॥ ससि
केपणदसमंडलेपणदीपेंदसासिंध । श्रयणाफिरेचौदसमदिनलपोविचक्षणचिंध १७५
दिवसउनाहठमासविवसासिरुतकोपरमान । एकाहठरविरुत्तकेपंडतकरेवपाण ॥
॥ १७६ ॥ साठमासरविरासकेवासठसासिकोसोइ । रिपसताहठयारगतिदसश्रय
णीयुगहोइ ॥ १७७ ॥ पंचवर्पयुगकेकहेचंदचंदश्रभिवद्द । चंदफेरश्रभिवद्दकोभापे
ज्ञानमहद्द ॥ १७८ ॥ रासरासमेंरविससीमिलेकवेविवमास । श्रधकमासतिहवर्पमे
विनामिलेपयमास ॥ १७९ ॥ रविनिकटीवुद्धसितसदाश्रागेपीछेनाल । श्रोडकअंत
रश्रंसकोसत्ताइसपणयाल ॥ १८० ॥ पुव्वउदेपश्चमथमेवुद्धसितगुरुकुजमंद । श्रति
चारगतिगुरुसनीवुद्धसितवक्रधरंद ॥ १८१ ॥ वक्रमार्गउदयस्तविधवुद्धचोमासेलेप ।
वीसीसतपणवीसकुजगुरुसत्ताईपेप ॥ १८२ ॥ पक्षेपट्वीसेशनीयक्रमार्गउदयस्त ॥

[illegible]

वक्रीसत्ताठ । नवमद्दसमरनिकुटलगतिफुनशीघ्रीश्रुतिपाठ ॥ १८५ ॥ कुजगुरुश
नितरवियदापंचपटमीरास । तवतेवक्रगतीभएमारगनवमेभास ॥ १८६ ॥ रविस
सितर्नीचसदारिपतेचालेसर्स । अर्द्धअर्द्धमंडलदुवेतमासि(न)उलटेफर्स ॥१८७॥ रवि
ससियुततमसितनिकटहोइपपकीसंध । रविकोअंतग्रहणदिनपूनमससिसबंध ॥
॥ १८८ ॥ सवनक्षत्रभोगेवरसबारहगुरुशनितीस । राहुकेतुअठदसवर्षकुजविववर्ष
कहीस ॥ १८९ ॥ वर्षएककुलघाटवधबुधसितभोगेसर्व । ग्रहरचणाइमजानीएलपो
ज्ञानगुणदर्व ॥ १९० ॥ सनिगुरुयुतवीसमवर्ससाठमउसहीरास । सनितमइतरे
चारमेंनवतवर्सउतभास ॥ १९१ ॥ इतरेगुरुफणीआठमेंउसीरासपटतीस । इकसौ
अस्सीवर्सउसयुतसनिजीवफनीस ॥ १९२ ॥ अहोरात्रिरविउदेतेतीसमहूरतजान ।
रुद्रसितफुनमित्रकहुवायुसुपियवपान ॥१९३॥ अभिचंदेवमाहिंदपलब्रह्मसचआनंद

विजयविरयसेनोकहाश्रीजिनपरमानंद ॥ १९४ ॥ वीयावच्चेउवसमेईशानेतेटेव ।
भायअप्पवेसमणकोवर्णवीसमोदेव ॥ १९५ ॥ सत्तसरंभिगंधवेअग्निविसायणलाम ।
आतवआधवतंद्ववभूमहारिसभोनाम ॥१९६॥ फुनसवठसिद्धाकह्योरापसअंतमहोइ ।
यथानामफलतिमतिसोजानलहोसभकोइ ॥ १९७ ॥ दवंछाडगुणवीसदसछयचतु
त्रयढइय दोयद्रडसवायकमेदसघडीयालगथीय ॥ १९८ ॥ पौनेबाराघडीतवआ
धीचौदसहोइ । पायछायसतरेघडीदिनगतिरहितेजोइ ॥ १९९ ॥ वाहकसोलेसहं
ससुरहयगयगोहररूप । ससिरविइंद्रविमानकेभूपणवस्त्रअनूप ॥ २०० ॥ अठग्रह
केचतुरिक्षकेतारेदोइहजार । चरविमानकेसाथहोसोभतहर्पअपार ॥ २०१ ॥ तारे
वाहकशीघ्रगतिरिपतांतेगतिमंद । रिपतेग्रहग्रहतेरवीमंदगतीआतिचंद ॥ २०२ ॥
तेरविर्पाइद्धर्या चै अधिंकर पारिय ॥२०३॥

साध ॥ २०५ ॥ अर्धकविठअकारसमतारेलघुसासिद्धय । मध्यआरवहुवर्णमयताम
सुरयुतारेध ॥ २०६ ॥ लघुविमानतारेतणेवडोचंदगुणदृव्ह । मध्यसर्ववहुवर्णमयता
मेसुरयुतरिद्ध ॥ २०७ ॥ वपुसुंदरपटभूषणेमालसुगंधसुहाय । तेजसलेसीहेमछवि
मुकटनाममेथाय ॥ २०८ ॥ अष्टभागपलअलपाथितवडीएकपलसोइ । वर्षसहंसअ
रुलापयुतसूरचंदकीहोइ ॥ २०९ ॥ श्रावकविरतविराधकीजोतिकसुरलगजाय ।
तापसतांमिलहैगतिभापेश्रीजिनराय । २१० ॥ चउपटराणीचउसहंससुरसमानगुन
चार । आत्मरखत्रपर्षदोसातअणीपरवार ॥ २११ ॥ चंदसूरपरिवारयुतआयानिवा
वेसीस । भक्तिकरैजगदीसकीजयजयजयजगदीस ॥ २१२ ॥ इति जोतिकरचणा
संपूर्णम् ॥ दोहरा ॥ कलपोतपतिदेवगणसहितविमानीइंद । दसहीनिजपरिवार
युतपूजेआयजिनंद ॥ २१३ ॥ गीयाछंद ॥ इसभूमिथीविनसंपजोजनऊचत्रयदस

फरके

ऊपऊपरिकेतुस्थिभरेपदा । पटहस्तदेहीदेवराजतविपयसुपभोगेसदा ॥ २२३ ॥
दोजलपतेथितसातसागरलगकहीओडकसही । वैराहलक्षणमौलधरसुरपदमगोरेछ
विलही । मुसपर्सइंद्रयकामसुपसुरलोकसंतकुमारहै । तिहइंद्रसंतकुमारसुंदरसंघको
हितकारहै ॥ २२४ ॥ कुछअधिकसागरदोइतेथितसातसाधिकलगसही । सुरसीस
मुकटेसिहचिह्नमाहिंद्रसुरपुरसुपलही । जिहलगलहैगतिपटसंघयणीइंद्रश्रीमाहिंद्रहै
सुरपञगौरसपसंभोगीभक्तिचितमुरिंद्रहै ॥ २२५ ॥ सुभब्रह्मलोकसुखेब्रसभतेअधि
कससिपूरणजिसो । खटभूमिकंतविमानलाखसुचारवर्णत्रिधातिसो । शतंसप्तजोजन
ऊचधुजपुतनीलकृष्णाविवर्जते । तिहइंद्रश्रीब्रह्मेसराजतधर्मकारजगर्जते ॥ २२६ ॥
जिहलगलहैपरवजंकीगतितमसकायजहालगे । लोकंतकीसुरजिहरमेलेसापदनति
हतालग । जिहकामसुखहैरूपमेतनपंचहस्तपदमनभा । थितसततसागरतेदशालग
छागलक्षणमोलभा ॥ २२७ ॥ वरकल्पलंतकभूमिपंचविमानसहंसपचासको । त्रय

जाहिंतिमसुनाल्ह॥
गधीजोजनशातरोऊचेरतनगरगाराको । सुरतनसुगोतियक्रिजा
जाप्र । सालूरलछणमुकटदीपतधंभ्रश्रील्होतकतापा ॥ २२८ ॥ शितद्भमउकनल्ह्यनु
बद्सल्गपंचकररसरूपको । जिहल्गलहेगतिकिलविरीसुरलोकल्तकभूपको । जि
एकत्पल्गगतिपुव्वचोद्शधारकीजिनवरकही । जिहल्गगोमसंचयणपनचरजान
श्रागमतल्ही ॥ २२९ ॥ सुरलोकलंतकलंघउपरिमहाशुकचतुरमही । चालीसहं
अविमानजोजनश्राठसेऊचेसही । शितपीतवर्णसुरिद्धपूरणारभेसुरचतुकरतनू । तय
सिक्रथितचोदशउदधल्हुवडीसतदशीभनू ॥ २३० ॥ तिहसतमेंदिवअंम्रसुंदरमहाशु
कमहाद्युती । सर्वांगभूखणमालअंबरकामविसेसद्भवती । जिनवचनरागीधर्मभागी
भक्तिचितवधावतो । जिनचर्णकमलसपर्सनिजसिररस्तवनरचगुणगावतो । सहिसार
शुरपुरकल्पश्रटमचतुरमहिमयजाणीए । तिहखटसहंसविमानदीपतमहाशुकसमा
...। ...भोगकलोलतावतमुकटगजमूरतमंडं । थितल्हुसतारहसागरीऔउक

ञठारहितिहथई ॥ २३२ ॥ जिहकल्पलगगातिलहेतिरयंचदेसविरतीसमगती । जि
हलगगमागमणंत्रियासंघयणचतुजिहलगगती । सहिसारनामसुरिंद्रउत्तमारिद्धशक्ति
सुहावनो । जिनराजगणधरसाधुकेपदहरपसीसछुहावनो ॥ २३३ ॥ वरकल्पनव
मसुनामञ्रानतसुरमुकटफणलछणी । थितउधतवसदसतेचढतउन्नीसलगतनरछणी
मनभोगरसइकवर्णउज्जलवरविमानसुहावणे । चतुकल्पनवसेजोजनेसुरतनात्रिहस्त
दिपावणे ॥ २३४ ॥ दसमेसुप्राणतकलपउत्तमथितजाघिन्नउन्नीसके । उतकिठसा
गरवीसगेंडेचिहनमुकटसुसीसके । विवकल्प चतुपितचतुविमानशतेंद्रप्राणतनामहै ।
जिनराजवंदनपूजनेञ्रातिभक्तिगुणञ्राभिरामहै ॥ २३५ ॥ सुरलोकञ्ररणेकादसेथित
वीसतेइक्कीसलौ । तिहचृपभलछणमौलवरलेपाकहेजिनवचभलौ । दिवप्रथमदुतिए
त्रतियेचतुरयोञ्रंद्धचंद्राकारहै तिहतेचतुरंसासिपूर्णतेफुनञ्रर्द्धसासिचतचारहै ॥ २३६ ॥

...प्रकासनो । चतुर्पतदुकल्पविमानवसनन्तु...
वरहंडमूरतचिहनमुकटमहाजोतिप्रकासनो । चतुर्पतदुकल्पविमान...
सुसासनो ॥ २३७ ॥ उतकिष्टश्रावकगतिजहालगचारपदवीमोकही । श्राजीविया
श्राभोगीयागतिहष्टग्रयतिहलगसही । वेक्रयउत्तरजिहलगकरैसेवकपलोपदगिह
लगे । मनभोगरसचतुकल्पश्रंतमनामश्रच्युतजिनमगे ॥ २३८ ॥ इहिकल्पद्वादस
भूमवावनवरविमानविराजते । जोजनअसंपप्रमानकेछविसंखकेछविछाजते । कल्पं
तभूमिरकल्पनामवडंसकेघरइंद्रको । उतकिष्टथितसुपसोलहेचितधारवचनजिनंद्र
कोइ ॥२३९॥ तिहइंद्रवासविमानकेदिसपुव्वसोमसुवर्णको । दक्षणादिसाजनवर्णवरु
मउत्तरेवैसमनको । इसभांतचारविमानमाहिलोकपालसुरिंद्रके । वहुवुद्धवंतनहंतसुं
दरवचनएहजिनंदके ॥ २४० ॥ किलविषीथितत्रेपलत्रिसागरात्रियोदसधारकसरा ।
वासीत्रयोदिसकल्पविवधुरत्रितीएतुरिएघरधुरा । लंतकश्रहेमुपदोपकेफलऊचथान
कनाहिलहे । निंदादिदोपविकारसंयुतसंजमीइहुफलगहे ॥ २४१ ॥ कल्पोचवीइक

लहैतिथ्थंकरपदलहैंइककेवलं । चक्रेसकेशववलमहीधरसाधुश्रावककेथलं । मिथ्या
तयुतइकभ्रमेभवभवइमकहैजिनचंदजी । भवजनसूनोइहिदेवरचणाधरोचितश्रानंद
जी ॥ २४२ ॥ चौसाठइंद्रपवित्रमनवचतनभक्तिजिनदेवके । उलसंतश्रंगप्रमोदपूर
णभएप्रभुपगसेवके । श्रोडकलहेनिरवाणपदइहवचणश्रीजिनधारके । जिनभक्तिफ
लसुभगतिसुकलधनधानसुखसंसारके ॥ २४३ ॥ मत्तगयंद छंद ॥ पंचहिपंचक
हीश्रसुरेंदकीपट्टत्रियाधरनादिककेरी । व्यंतरजोतिकइंद्रनकीचतुश्रग्रहमहेपिसुरिद्ध
चंगेरी । शक्रइशांनकिश्राठइमेपरवारसमेतजिनदांकिचेरी । वदनपूजनप्रेमधरीजिन
वैनसुनेयररीझघनेरी ॥ २४४ ॥ चौसठसाठहजारसमानकहैचमरेंद्रवलिंद्रकिभारे ।
पठसहंसयुतेधरणादिकव्यंतरजोतिकचारहजारे । चारश्रसीयश्रसीयवहत्तरसत्तर
साठपंचाससुमारे । चालिसतीससुवीसदसोमघवादिसहंससुसोभतसारे ॥ २४५ ॥

जरावहुकथिकिहोतसुवंधतपुन्नभंडारे ॥ २४६ ॥ साजसजेइकऊनपचासविधिदसदो
यसुतालवजावें । सातसुरेतिहुग्रामकरीपटरागसभीपरिवारसुगावें । नाटकभांतवनी
सरमेवहुभांतसुछंदपढेरसपावें । भक्तिकरेसुरश्रीजिनकीकरजोरनमेजयकारवुलावें ॥
॥ २४७ ॥ दोहरा ॥ द्वादसकलपातेपरेकलपातीतकहाय । दुक्करकरणीअतितपीम
हात्राक्रमीथाय ॥ २४८ ॥ नौग्रीवेगअनुत्तरेदोविधकहेजिनंद । जतीलिंगविनऔर
नहिपावेपदआहिमिंद ॥ २४९ ॥ भद्रसुभद्रसुजातदिवसुमनसुचोथोनाम । पियदंस
णसुदंसणीअरुअमोघसुभठाम ॥ २५० ॥ सुप्रवुद्धयसोधरोनवग्रीवेगकहंत । पंच
विपसुपअधिकसुरभुंजेमनउलसंत ॥ २५१ ॥ नवग्रीवेगेनवमहीदसमिअनुत्तरजान
वावनकल्पअकलपदसवासठमहीविमान ॥ २५२ ॥ ऊंचेएकसहंसामितजोजननवग्री
वेक । तामेविवकरतनअमरसजेएकहीएक ॥ २५३ ॥ वाईसागरतेचढतएकएकनव

माहि । थितजघिन्नइनतेअधिकइकइकओडकताहि ॥ २५४ ॥ नवग्रीवेगेतीनत्रिकहे
ठमध्यउपरेव । तिहविमानसयतीनयुतअष्टादसभणएव ॥ २५५ ॥ इकसौग्याराहि
सातयुतसौतीजिसयएक । स्वेतरतनमयकेतुयुततामेदेवअनेक ॥ २५६ ॥ जिहलग
देवविमानीयासहितलोकंतकदेव । वासुदेवपदलेनकीभापीश्रीजिनएव ॥ २५७ ॥ अ
नियानीसनियानियाअंतअनंतभवीय । आराधिकद्रवलिंगकीजिहलगदेवसहीय ॥
॥ २५८ ॥ जिहलगभव्यअभव्यसुरसमकितअरुमिथ्यात । ज्ञानतीनअज्ञानत्रयनव
ग्रीवेगकहात ॥ २५९ ॥ इकसमदिष्टीसुद्धाचिननिःसंसेव्रतपाल । धर्माराधिकसुरुच
रदंसणज्ञानरसाल ॥ २६० ॥ इकसंसयमिथ्यातयुतसमकितरहिताचार । करकरणी
ममसाधकीतहाभएअवितार ॥ २६१ ॥ उत्तमदोसंघयणकेनवग्रीवेगेजान । तांऊप
रसमदिष्टधरअमरअनुत्तरविमान ॥ २६२ ॥ गतिथितकल्पानीकहीअथमगंघयणी

[illegible] । [illegible] ॥ २६४ ॥ [illegible]
दराशतेतऊपरकेतु । दर्वअनुत्तरमाणिद्दिपततामेसुरमुपलेतु ॥ २६५ ॥ इककरतनासि
तरतनलुतिअतिवलसुपजसशाक्ति । सकलअमरसिरमुकटमणिचितजिणवरगुणराक्ति
॥ २६६ ॥ तससन्नीपंचिंदियापुरुषलिंगाजिहताय । अल्पकर्मउपमुक्तिकेदेवअनुत्तर
थाय ॥ २६७ ॥ पंचविमानअनुत्तरेपंचविधेउतकिष्ट । पंचमगतिकेपाहुणेपंचपदेचित
इष्ट ॥ २६८ ॥ चहुमेलघुइकतीसकीउताकिष्टीतेतीस । मध्यसर्वतेतीसहीसागरकही
मुनीस ॥ २६९ ॥ जितनेसागरआयुसुरतापक्षेफुनसास । तितनेवर्षसहंसगतिभूप
करेपरगास ॥ २७० ॥ मध्यागिरद्वासठखितेतांचहूदिशोत्रिकोण । चौकूणेफुनगिर
दइमधुरपिनवासठहोण ॥ २७१ ॥ पितपितइकइकघटतइमअंतअनुत्तरएक । पंक
तवंधविमानइमचहूदिसअमरअनेक ॥ २७२ ॥ धुराविचलौनरपेतमितसमादिसउड
सुभनाम । अंतमजंबूदीपसमसरवार्थसिद्धठाम ॥ २७३ ॥ पंकतवंधीसर्वहीजोजन

ञगनतमान । तिमहीताकेअंतरेजिनवरवचनप्रमान ॥ २७४ ॥ पुण्यकीर्णश्रौरस
भसंपञसंपप्रमान । दिपेसेपपितऊपरेविवधवर्णसंठान ॥ २७५ ॥ चौरासीलपसह
सयुतसत्तानवेतेईस । सवविमानपितवासठेदेपकहेजगदीस ॥ २७६ ॥ सातवीससै
धुरधराअंतमसैइकीस । भूविमानमिलपिंडसभजोजनसैवत्तीस ॥ २७७ ॥ आयुवर्प
वसतेचढतकोडपुव्वलगकोइ । पालमहाव्रतदेसव्रतसुरविमानपदहोइ ॥ २७८ ॥ सो
ओडकनरदेवकेनातआठभवपाय । केवलदंसनज्ञानलहिसूधेशिवपुरजाय ॥२७९॥
कल्पातीतसुभक्तिचितप्रभुसेवेनिजटाम । ध्यावेसेवेगुणसमरमोदलहैअभिराम२८०॥
वाराजातकेकल्पलगआयकरेजिनभक्ति । वंदनपुजनथुतकरणकथासुनेचितरक्त२८१
चहुविधसुरतेहोतहैवलचक्रीसर्वज्ञ । सुरविमानजिनराजहरितिर्थकरवचतज्ञ ॥२८२॥
तिहुंलिंगातेदयगतितांतेतीनिलिंग । नहिनपुंससुरगतिविपेजिनवचणेनहिविंग२८३॥

निःमळश्रमकळसनपारकरम
॥ २८४ ॥ मिनयधर्मअनुरक्तिजिनपाठिनिमआगार । आराधिकपदपायकेउ
सार ॥ २८५ ॥ वहुआगमविज्ञानधरलहिसमाधिगुणगह । आराधिकपदपायकेउ
चीगतिकोलह ॥ २८६ ॥ सर्वाराधिकउक्त । यासर्वविराधिककहेन । देसआराधिविराध
कीचहुविधज्ञातावेन ॥ २८७ ॥ सहेपरीसंक्षमाकरचहुसंघसुपहोइ । तथाआहीपर
लिंगीकसर्वाराधिकसोइ ॥ २८८ ॥ सहेंचतुरविधसंघकेऔरनकृतहेय । देसविराधि
कसोभणजिनवरवचनकेहेय ॥ २८९ ॥ निजमतिपरमतिसवनकेमहनकोईसोइ ।
सर्वविराधिकसोभणउक्षहीनगुणजोइ ॥ २९० ॥ औरसवनकेसहितहैसंघोसहेनजेय
देसाराधिकदवदवाउक्षभदतिमतेय ॥ २९१ ॥ रागसहितअराधकीदेवविमानीहोइ
पदवीपंचविपेजतीवीतरागाशिवसोइ ॥ २९२ ॥ वालतपीउतकटरसीतपमानीवेरीय
कोधीतपीनिमित्तकीअसुरजानमेथीय ॥ २९३ ॥ अरिहंताअरुधर्मकीगुरूउपाध्या
कीय । निंदाचहुविधसंघकीसुरकिल्वविपीयाथीय ॥ २९४ ॥ विकथाहासकंतूहलेक

रेचपलताकाम । इंद्रजालइमदोषघरकंदरपगुरुठाम ॥ २९५ ॥ मंत्रयंत्रतंत्रौपदीसु
परसारिद्रोहेत । इत्यादिकदोपेसहितअभियोगीगातिलेन ॥ २९६ ॥ विपभक्षणआयु
धकरीजलअगनीइत्यादि । अनाचारसेवीमरंवधजन्ममरणादि ॥ २९७ ॥ तपसंज
मकरणीकरेविपभोगसुपचाहि । धर्महीनिधर्मांतरोदुपलहैभवमाहि ॥ २९८ ॥ कीए
नियानितुछफलवहुकरणीकोजाय । रतनअमोलकमूढजिमवेचेलघुधनपाय ॥२९९॥
विपयकपायविकारवमफोडेलम्रधजुकोइ । प्राहचितदंडलीएविनानहीअराधिकहोइ ॥
तपसाकरणीवहुकरेकामलालसात्रीय । गणकादेवीमाहिगतिवहुसुरभोगकरीय ३०१॥
जिहइछाभंतानकीवालगुपालपिडाय । वहुपुतीयाजिमसोभवेकरणीकाफलपाय ३०२
...पनपीआयुधपणमानेवाहनहोइ । कपटसभानिरादरीलोभारिद्धलघुदोय ॥ ३०३॥
मुनिकारभेद्हैनपकरणीक्माय । भेददेयमेउपजकेचंचकमैत्रनाथ ॥ ०४ ॥

[illegible]
[illegible]भाय । भावजातकल्पाकौगेनिजभुक्तिमश्राय ॥ ३०७
[illegible]नमाय । [illegible] जिनराजकी । [illegible]धर्मसहित
सोरठा ॥ [illegible]सुणनाणीजिनराजकी । [illegible]
संपतिल्यो ॥ ३०८ ॥ उत्तमगुरवरसीय औजिनधर्मभक्तिचित । जिनमगकेपीजोव
भवसागरमैंसोभ्रमै ॥ ३०९ ॥ [illegible]कहीएदेवकी । सुनोभवकचि
[illegible] ॥ ३१० ॥ कवहुंसतोगुणठाणकवहुरजोगुणमेरमै ।
कवहुतमोगुणथाणकरैकमैनकुशांतके ॥ ३११ ॥ द्रुमल ॥ छंद ॥ कवहूं
तियसाथकलोलकरैकवहूंनृतगीतविनोदचहै । कवहूंवहिराजसभाविगसैकवहूंरिप
सोरणभूमिदहै । प्रभुसाथसपूरणभक्तिकरीकरजोरसुछंदउचारकहै । मिलमित्रहसे
हितरीतरमेइसभांतदिवोनिसमोदलहै ॥ ३१२ ॥ कितहूंनटहोकरनाचतहै कितहूंव
रजंत्रवजावतहै । कितहूंहयरूपकरीहिनकेचपलागतिवेगजिवावतहै । गजरूपकरी

गरजाटकरै सिंहनादकरीहरआवतहे । फणधारफुंकारकरेयरहीवहुभातकिनाचदि
पावतहे ॥ ३१३ ॥ कितहूंहसवारवनेपरकेकितहूंबिनवाहणधावतहे । कितहूंहथ
पारवनेसुरकेकितहूंहथपारचलावतहे । कितहूंत्रियश्रारचलेपुरुषाकितहूंरुपसोत्रिय
श्रावतहे । कितहूंप्रशनोत्तरवादकहूंसुरपेलासिदंतदिपावतहे ॥ ३१४ ॥ कितहूंल
लनासुविनीतभईपियकेपगसीसछुहावतहे । कितहूंरिसधारगुमानभरीपियश्रातर
होइमनावतहे । कितहूंलककेविवपेलतहेहरपेनिरपेमुसकावतहे । इमहूंवहुभांतक
लोलकरैरचणागुणवंतसुनावतहे ॥ ३१५ ॥ कितहूंपरपेछलसोनुनिकोधररूपपिशा
चडरावतहे । कयहूकरजोरलगेचरणोविघसोअपराधपिमावतहे । अतिरीझधरीसम
सेवककोमुनिकेगुणग्रामदिपावतहे । कयहूंधरश्रोघलपेतपसीनिजठाननमेगुणगाव
तहे ॥ ३१६ ॥ सुरसंगमतीरथयानकहूंरिपज्ञानजगेनिरवाणसमे । कितहूंथिनश्रट

[illegible] । नरपासुभगंधमई जलकी फलफूलसुगंधमईदलकी । कल शीलमणीरजतोतमकीपटभूपणकीमुकताफलकी । सुरदुंदभिनादकरेहितसोदसहींदि सामाहिप्रभाझलकी ॥ ३१८ ॥ कितहूंवरऔषधगंधमईकरचूरणदेवउडावतहे । कितहूंवररत्नमईकरझालिपउत्तमधुपधुपावतहे । कितहूंवरगेंदलईविधसोनभमाहि सुपेलदिपावतहे । कितहूंसुरचंदवणेहितसोजयकारसुसब्दवुलावतहे ॥ ३१९ ॥ इकतीरथनीरसुकुंभभरीइकपीरसमुंद्रसचावतहे । सललाविमलाजलगंधमईप्रभुम जनहेतसनावतहे । वरऔषधमेरुगिरीसिपरोवरचंदनआदिमंगावतहे । वहुवर्णसुपु ष्पसुगंधमईवननंदनआदिकल्पावतहे ॥ ३२० ॥ मरदंगसुझालरभेरतुरीनरसिंहन गंटनसंघणकी । घणाघोरमहारवदुंदभिकीजयकारभईधुनदक्षणकी । रसहासासिंगा रमुवीरसजेरनणारसअद्भुतलक्षणकी । अतिमोदतदेवमहेत्रिविकोप्रभुभक्तिकरीसुभ

छ

[illegible]णी ॥ ३२१ ॥ सम[illegible]रिलमुं[illegible]ग्रसंभ[illegible]लैटयुनघ्यविपंभलवानमई । इकजोज
[illegible]सुद्धीपकुनामधई जगतीवरवज्रमईगिरदेचतुद्वारचहूंदिसक्रांत
। [illegible]राजिननामसदीवलई ॥ ३२२ ॥ इसदीपविपेव
[illegible]नोजनलाखजणो । निसपूरवपछनमैविवतीसमहाविजयाजिनध
[illegible]णी । [illegible]उत्तरतोसमईरवर्त्तीसभमाचभणो । सुरस्वामिश्रणाढिपदी
[illegible]लमणो ॥ ३२३ ॥ इहदीपमपूरणचंदजिसोइनकोलवणोद
[illegible]लिया । [illegible]जनलापविपंभजलेविचैहृदगनालजिमोडलिया । दससहस
[illegible]नहजारदमोटलिया । सुठियाहवणोदधिनामाद्दिपैरननाचरमुकुन
[illegible]लिया ॥ ३२४ ॥ [illegible]
[illegible]

[illegible]

धरकीउत्तपतसही । इहदीपढुसाढंढुसिंधयुतेनरषेतकहाजिनमोपगही । इहतांइघ

णाद्धिकभेचरणासुरजोतिकचाल्वलोकलही ॥ ३२६ ॥ जिहवादरपावककाल्सुका

लभवेनरउत्पतिकालकरै । जिहतांइमहाव्रतधारमुनीव्रतद्वादसश्रावकधर्मधरे । नर

रूपजिनेश्वरचक्रपतीबलकेशवकेशवजेहहरे । सर्वंग्यमुनीजुगलादिविराजितसोनर

क्षेत्रसुरिद्धभरे ॥ ३२७ ॥ सभदीपचलेजलरासमहीतिहसागरकोइमदीपवले । दुग

णादुगणाविसतारकहाइमहातत्रसंपसिद्धंतचले । समभूरमणोदधिअंतमकोजिनवेन

सुणेभ्रमरोगटले । इनमेंबहुथानकहैसुरकेसुपभोगविलासकरैसुफले ॥ ३२८ ॥ इन

दीपसंमुद्रअसंषणभैतिरयंचपांचिंद्रयसंपविना । कुछदेवनिसानिलपीपिछलीलपज

न्मपुरातनधर्मगुना । व्रतधारइकादसश्रावककीतपसाकरपापषपंतघना । गतिआठ

मकल्पविषेतिनकीइहिवेनजिनेश्वरदेवभना ॥ ३२९ ॥ तिरयंचपांचिंद्रयसन्नअसन्न

...रचणा
।५२॥

अकाममईनिजराकिफलौ । गतिभौनपतीवनदेवविपेतिथओडकभागअसंपपलौ ।
अनवंतपुरातनजातलपीग्रहवालतपंगातिजोतिकलौ । समदिष्ठलईसुभधर्मरुचीधुरक
ल्पलगैसुभभावभलौ ॥ ३३० ॥ जुगलाथितभागअसंपपलोसभछप्पनअंतरदीपन
के । गतिभौनवनेपनहेमवएपणइएँवएपलएकनके । धुरकल्पलगैउपजैतियतंदुतिए
लगजावनशेपनके । पिछलेसुभासिचततेसुरहीनिजआयुसमंकहिउछनके ॥ ३३१ ॥
नगतागतिनारकिवाताशिपीविकालिंद्रसमूछममानवमैं । जलभूवनवादरमैउपजैनग
तागतिसूपमकेभवमैं । नरतेनरमैतिरयंचतथाउपजैनअसन्नातिर्यचनमैं । जुगलूसुर
हीसुरनाहितहाउपजैइमफेरननीदिवमैं ॥ ३३२ ॥ गतिसंधिलगैमरणांतसमैनरमैति
रयंचविपैसुरको । तिहमिश्रसुभावभवेसुरकोइतअंतमपावनकेधुरको । इकगर्भविपे
उपजेरतवेक्रयओधमहवलहैउनको । तपज्ञानतणाफलहोलइसोइहिचैनअनंतवलीः

पतिव्रतपतीजलधीश्वरतारथदेवसती । इहवालपुरीसलकायरणीमाण आवधकारम
णीसुमती । इमऔरघणीविधदेवत्रिपैहितधारकमानवलोकरती ॥ ३३४ ॥ इकहैसु
पदायककलपपतीजुगलाजनकेचितसेवनको । इकहैनरसाधरमीयमक्रूररहैनरकेदुग
देवनको । इकलोकफिरैचउसंधविपेजगसारभलीविधलेवनको। इकउचपदारथसा
थरहैरतनादिनिधीसुपवेवनको ॥ ३३५ ॥ इकमंत्रअधीनसुरीसुरहैइकयंत्रनसेइकतं
त्रनमैं । मतिभेदघणेजगमाहिकहैतिनकेहितबंधघणेमनमैं । इकवंदनपूजनसेवनते
सुखदायककाजविपेघनमैं । इमदेवविराजतलोकविपेइकहैरपवालमहाधनमै ३३६॥
इकपेचरपेत्रविपेरमतेनरनारिविपेवहुशक्तिधरी । नभचालपतालप्रवेसविधेजलपाव
कवातघातादिकरी । तनरूपवढावनभेपधरीवहुदेवउपावनगुप्तचरी । इमऔरघणी
जगरीतविपैवरतेमनमोहनरीतभरी ॥ ३३७ ॥ इकदेवरमैनरकीतरुणीनरसाथरमै
इकदेवत्रिया । नरलोकविपेइकमोहधरीइकदूररहैमनदूरकिया । इकमोहकरीनरसै

नवनेइकवैरकरीभयरोगदिया । रचणासुरकीवहुभांतलपीजिनजैनकिवैनपयूपपिया
॥ ३३८ ॥ इकवैरकरीनरकेधसकेरिपकोदुपदेनडरावनही । पिछलेभवमोहकरीदु
पमोचनकारनकोइकजावनही । रिपसोरणमंडणकारणकोमिलनेफुनामित्राकिधाव
नही । सुरऊरधकेजुपतालधसेतिहकेइमऊरधआवनही ॥ ३३९ ॥ इहिलोकअवी
नश्रुतागमहीसुरलोकविपेसुरसाथरहै । तिहदेपवडेश्रुतिधारककोअभिमानगलेचित
सेगरहै । पछतावतहैचितथंतइसोबलप्राक्रमहोतप्रमादगहै । नहिउद्वमआगममा
हिकीयोश्रवहोइनिरुद्वमपेदसहै ॥ ३४० ॥ कितहूंजिनआगमकीचरचाजिनआगम
सापसुनावनही । कहुवेदपुरानपढाहितसोअपनेअपनेमतभावनही । कहुछंदकला
प्रगटरससुंदरतालसुगीतवतावनही । कहुशब्दमईवरग्रंथपढेयरवोधप्रकासदिपाव
नही ॥ ॥ कित रस्रापथकीअधिकोलपके ातिआरतमाहिपरे । कित नि

कितहूंसुरचोरकलाधरकेदवडेग्रहरत्नत्रियापरकी । पकरेतहिदेपथनीवलसोवहुत्रा
युद्धचोटकरेकरकी । तमकायविपेछपजायकत्रेजहिजोतनदेवमणीधरकी । इकदुठक
लाधरदेवघणेपरमानतसीपधराधरकी ॥ ३४३ ॥ रणमाहिसुरासुरझूझतहैत्राहिदेव
सुवर्णकुमारमिली । इमहीइनरेरिपसाथभिडेवलप्राक्रमआयुधधारवली । इतनोजु
विशेपविमाननकोत्रिणकंकरपातचलायफली । वहुहोतमणीमयत्रायुद्धहीरिपअंगल
गैतिहशक्तिदली ॥ ३४४ ॥ सुभसव्दसुगंधसुवर्णमईरसउत्तमनाथसपर्सभले । सुप
भोगनपंचविपेविवधामनवेनसरीरविपेकुसले । वहुवर्षपलोपमसागरकीजिहत्रायुज
रादिकरोगटले । इहिपुन्नमहातरुकेफलहैसुनयोनरनारिसुजानरले ॥ ३४५ ॥ सुभ
वंधनवंधनदेवतवेजवभक्तिकरैजिनकीमुनिकी । पदवंदनपूजनप्रेमधरीमहिमावरणे
तिनकेगुनकी । सुनकेसभधर्मकथारचणारचनाटकगीतमहाधुनकी । सुभकर्मविपे

सुभवंधइमेरचणारचणीजिनजीउनकी ॥ ३४६ ॥ सुरवंधनभावमलीनविपेवहुकर्मभ
विक्षतनीचमई । तनचोटलगैजवआयुधकीनमरैविनपूरणआयुथई । सुरशक्तिनआयु
वधावनकीगतिजोनछुडावनकीनभई । सभकेसिरऊपरकर्मबलीइहसारमहामुनिरा
जदई ॥ ३४७ ॥ परिलिंगग्रहीकहुष्यायकभावचढेलहैकेवलज्ञानजहा । इकदेवत
हामुनिभेपदएमहमान्नतहासकरंततहा । कहुवष्टकरैपनवर्णप्रसूनसुगंधतनीरसुधूप
महा । कहुसाधुसुश्रावकदेहतजीसुरभक्तिन्नतादिकरंततहा ॥ ३४८ ॥ सुरथंभनस
त्रासिपीजलवातपशूनरव्यालमहावलको । पिणमैतरुवेलउगायकरेफलफूलफलीस
घणेदलको । लघुकालविपेरचवासपुरीविपनीग्रहवासमहीयलको । वहुकाजकरैनक
रैशिवकोमुनिराजकरैपदउजलको ॥ ३४९ ॥ जलमाहितरावनपाथरकोगिरपाटउ
डा...

[illegible]

गळवीअविर्दीनमहीविभणतिनते । लघुवुद्धविचक्षणराजथएमनंबछतरिद्धकरेछिनते ।
गुरशक्तिघणीजिनराजकहीछदमस्तसुथाकरहेगिनते ॥ ३५१ ॥ गिणमोपहुचावण
दूरथकीलघुपेअविपेवहुधापसरे । कहुसीसग्रहैनरकोपशुकोंकरचूरणदेसविदेसभरे ।
तिहफेरनुनेरचसीसधरेतिहजीवनकोनहिसारपरे । इहआक्रमदेवमहावलकोपरिश
क्तिनहीनिजमुक्तिकरे ॥ ३५२ ॥ दिनकोरजनीनिसवासरहीहिमग्रीषम २ सीतकरे ।
विनकालविपेवरुपारुत्तहीवरपारुतमेविपरीतधरे । विपअंम्रतकंकरकोमणिहीदवपा
चककाननरिद्धभरे । लजकाथलभूमिकरेजलहीसुरशक्तिघणीमुनिवाकपरे ॥ ३५३ ॥
उदरोकहुगर्भवटावतहैचहुभांतकरेअतिपिप्रसही । नहिपेदकछुजननीगरभेसुरश
क्तिप्रभावअनंदलही । कहुनाभथिनाभअवेसतहीकहुजोनथकीफुनजोनवही । कहु
नाभथिजोनविपेअरुजोनथोनाभविपेसुरशक्तिकही ॥ ३५४ ॥ इकदेवकतूहलपेलक

रैपशुगानवसीसवरायधरै । तिहदेपहसेफिरठामकुठामसवारधरैमनमोदभरै । इक
देवमहावलपिम्रगतीकुउदर्वउछलचलंतफिरै । इसदीपतणेगिरदेकितवारयनेसुझपेड
मशक्तिसुरे ॥ ३५५ ॥ अतिआक्रमवंतसुजानगुणीवहुकारजसाधिकलोकतणे । नहिं
शक्तिमुनीइतकीतिनमैंनहिंश्रावककोइतदेसभणे । इसकारणसम्यकवंतसभीमुनिको
पदउतमऊचगिणे । तिनकेपदपंकजपूजनहीवहुभक्तिकरैजनदासयने ॥ ३५६ ॥
रिपमोहमहावलसाधुहणैनहिशक्तिसुरिंदमहावलकी । मुरतेनभवेमुनिलोकअलो
कप्रकासकरैदुतिकेवलकी । सभदेवअशक्तिकरैकरणीमुनिमोपमहापदउज्जलकी ।
इसकारणदेवमहामुनिकोधरभक्तिभविक्तमहाफलकी ॥ ३५७ ॥ जिनराजसमोसरणे
इककोडजपितपदेसुरसेवकरै । उतकिष्टपदेसभइंद्रममेतअसंपामिनेचितमोदभरै ।

तरवैसुरवैक्रयकोबहुरूपबनेयुतद्धगुणे । बहुदेवरवेयुतारेकपुरीवनासधुयमूहमग्रार

सुने । सुरशक्तिवर्णीनहिमुक्तिमईमुणिमुक्तिकरेतहिदेवथुने ॥ ३५९ ॥ गुणपूरणसंयम

धंतमुनीसुरतेजउलंघचलेस्वबले । इकमासअवर्जतवितरकोउरगादिदुमासउलंघचले

इममासहिमासवधेतवतेअसुरोग्रहतोइमइंद्रचले । इककल्पदुगेदुगचौनवतेपनतेमुनि

उत्तमसर्वथले ॥ ३६० ॥ इसलोकविषेनरनारिचणेसुरवंदनसेवनमंत्रलिपे । करध्या

नरचेविधपूजनकीसुपसंपतिकोवहुकाजविपे । जगकाजकुकाजकहैजिनजीशिवकाज

सुकाजसिद्धतलिखे । इसकारणदेवनमेमुनिकोहमवंदतहैमुनिकोहारिखे ॥ ३६१ ॥

धुरएकमहूरतअंतरमाहिअजानअपूरणआदिदशा । उपरंतसपूरणदेहमईदुतियासु

खभोगमईसरिसा। जबआयुरहीखटमासतवेत्रितियादुखसोकवियोगवसा । इसका

रणभाखतहैत्रिदशासुभकर्मकरीसुरलोकधसा ॥ ३६२ ॥ अथनवरसरचणा ॥

दूमल छंद ॥ तनरूपप्रभापटभूखणकीभवनादिछवैसुसिंगारकहै । वलप्राक्रमवैक्र

देवरचणा

॥ ९१ ॥

यकोकरुणारनमेरसवीरस्वरूपलहै । दुखमोचनकोसुखदेवनकोसुरयालभएकरुणा
सुगहै । रिसवंतभएभयकेकरणेरणखेत्रविखेरसरुद्ररहै ॥ ३६३ ॥ सुखभोगविलास
हुलासविखेनृतगीतरसेरसहासभवे । अपवित्रकुगंधकुरूपविखेअमनोगममाहिगिला
नठंवै । लखकालसमापरकेडरतेभयवंतभएरसभीतलवे । रसचित्रजिनंदविभूतलखे
रससंतसमोसरणेसुहवे ॥३६४॥ दिसदक्षणउत्तरलोकदुधासुरवासदुधातिहइंद्रदुधा
कुछआयुवडीवलरिद्धतथादिसदक्षणतेइतरेविबुधा । सभलोकतणाविचमेरुगिरीजगम
ध्यदिशातिहतेवसुधा । दिगपालकरीसुरसाथसजे जिनको जिनवैनपयूपछुधा ॥३६५॥
दिसदक्षणलोकपतालविपेचमरिंद्रविराजतभौनपती । तिनकेसिरऊपरऊरद्धलोकसु
सक्रसुरिंद्रअनूपमती । इमहीवलइंद्रसुउत्तरमैतिहऊपरइंद्रइशानपती । इमहीइन
केउनकेउपरेवरइंद्रविमानपतीर ग ॥ ३६ ॥ कव मघवार ईशानमिलेइ ठाम

ईशानजवैतवसंतकुमारकुध्यानधरै । बहुत्र्यावभएजिहसोवदएबहुमानलएचितवैरहरै
॥ ३६७ ॥ सुरउत्तरवैक्रयरूपकरीउत्तरेइत्तरेइतत्र्यावतहै । कवहूंकितकारणतेनिज
मूलसरीरलईफुनधावतहै । इकतेगिणसंपत्र्यसंपलगैतनधारणशक्तिसुहावतहै । रच्च
णासुरकल्पलगैवरणीउपरैनहिलभ्धफुरावतहै ॥ ३६८ ॥ तनभागत्र्यसंपमअंगुलको
भवधारणत्र्यादिसमस्ततणे । उतकिष्टपदेकरसातलगैविचभेदत्र्यसंपजिणंद्रभणे ।
सुरउत्तरवैक्रयरूपलघूमितसंपमभागजघिन्नपणे । उतकिष्टसुजोजनलापलगैइसत्र्यं
तरभेदत्र्यसंपवणे ॥ ३६९ ॥ षटमासरहैजवआयुतवेकुमलावतफूलकिमालगले ।
सुरचीरमलीनलखैत्र्यपनेवलहीनहुलासविनोदटले । लपकालसमाअतित्र्यारतहीत्रि
यमित्रवियोगदुपादिरले । नहिदेवकोजीवनहोततवेइमभापतहैमुनिराजभले ३७०॥
लपकालधरैसुरत्र्यारतकोहमरेदिवभोगविलासटरे । इततेचलगर्भविपेपरकेघुरवीर
जरक्तित्र्यहारकरै । वहुमासलगैतमघोरविपेदुरगंधमहादुपगर्भभरै । जिसदेवजिने

श्वरहोवनहैइमसोनाहिचिंततशोकधरै ॥ ३७१॥ लखजन्मभविक्षतमानवकोत्र्प्ररुआ
रजदेससुधर्मकुले । हरपेसुरसुंदरभावधरैचित्तत्रेफुनधर्मकरोंसुफले । जलभूवनमैति
रयंचविपेसुरझूरणआरतमाहिरले । निजकर्ममहावलवंतभएइमभापतहैमुनिराज
भलै ॥ ३७२ ॥ इकपेत्रसवारणश्र्प्रावतहैजिहमाहिभविक्षतमानलिया । श्र्प्रपवित्रप
दारथदूरकरैसुभपुग्गलासिंचतपेत्राकिया । रिपरूपधरीशिवहेतकहूंउपमातापिताभण
वैनठिया । तुमरोसुतहोवनजोगश्र्प्रहेतुमनोश्र्प्रटकावतमोहिहिया ॥ ३७३ ॥ सुरका
लकरैत्रियाजीवतहौउपजैसुरहोरसुभोगकरे । चवजातत्रियातिहहोरभईमिलभोग
करेचितशोकहरे । विरहोउपजंतजघिन्नसमोउतकिष्टपदेपटमासपरे परिवारमिलाप
वियोगइमेसुरकल्पलगैमुनिचाकपरे ॥ ३७४ ॥ दुहुकल्पलगैजलभूवनमैथितसंप
मईतिरयंचनरे रत्न मकल्पलगैनरत्र्प्रो नेरपंचपर्चि यदेहध रे । उपरेनरजौनवि

भवगाननकोमहुनिकजहाधनधानमता । अहुपत्रपशुवहुदासस पावसुसुंदरभूषणचातुरता । कुलऊचसुआयुअरोगपणाइहिपावतहैमुनिजीकथिता ॥ ३७६ ॥ दसजातपतालगुभोनपतीसगकोरवहत्तरलाखविषे । सुरविंतरषोडशजातदुधातिरछेजुअसंखपुरहरिषे । नभचंदरवीग्रहरिष्यउडुदसजातचराचरभेदलिये । वहुउरवद्वादसकल्पपरेनवपंचविधेअहिमिंदसुखे ॥ ३७७ ॥ अथसिद्ध अस्तुति ॥ दूमल छंद ॥ सुरलोकसभीजिहहेठरहेशिवस्वछअनूपप्रभाधरणी । तिनकेकछुऊपरसिद्धप्रभूमाहि मातिनकीजिनजीवरणी । नहिजन्मजराअतरोगछुधाभयसोगउपाधकयाकरणी । परमेश्वरपूरणब्रह्मसदामुनिराजभएतिनकीसरणी ॥ ३७८ ॥ सभजानरहेसभदेखरहेदुखसुखअवेदसमाधिथई । अविकारअचाहिअमूरतहैनहिगोतसुभासुभभांतलई नहिबंधनआयुअनायुभएसअव्यापकआतमराममई । वसुकर्महणेगुणअष्टदिपैभव

सिंधतरैलहिमोंखगई ॥ ३७९ ॥ चिनरूपाचिदानंदचैतनहैअविकलपानिरंजनलोक
पती । ध्रुवआदिअनंतअनादिकहैअविनाशअखंडअनूपगती । असरीरअनिंद्रयप्रा
णनहीमहिमाश्रुतिवाकविखेवरती । प्रणमोपरमेश्वरसिद्धसदाचितमोचितमीसमता
सुमती ॥ ३८० ॥ जगदीश्वरलोकअधारप्रभूजगमस्तकउत्तमऊचवसै । सभकेसिर
ऊपरलोकशिपाजिममंदरऊपरकेतूलसे । सरवग्यलपैनिरपेतिनकोछदमस्तसुध्याव
नसांतरसै । प्रणमोपरमातमजोतमईजिहकेसिमरेअघपुंजनसै ॥३८१॥ कमलवंध
दूमलवंदयुग्म अनुघंअरुजंअमितंअतुलंअकुलंकयसंअस्वस्तपदं । अजअव्याथिरंअ
नकंपतकंअछिदं अजयंअभयंसुपदं अलपंअभुजंतुचराचरलंघअनूपमसंरमणंजयदं
प्रणमोअमरंसभतेअधकंप्रभुसिधपयंसभमंगलदं ॥३८२॥ परमेश्वरहोपरमातमहोप
रमोतमहोपरमोचकहो। परमामहिमापरमागममे परचीनारिदेपरतीतहो । परवर्ज
तहोशिवसासतहो अजरामरहोतवसर्वगहो । सुरनागसुमानवभव्यनमे प्रणमो शि

तादि

[illegible] ॥ ६१ ॥

[illegible]

[illegible] नाम [illegible]
[illegible]
नन । जमधरणास
श्रवगण तरभवज
परण सभमयदरण
य करण ॥ ३८८ ॥
नु ॥ सवैया ॥ ३२ ॥
ति अमितधर सु
वचतन सुकविनिमि
[illegible] रति मुनिरचपदनरसुजराकथनगन परमहरपउरविकसतदग

सिंधतरैलहिमाँखगई ॥ ३७९ ॥ चिनरूपचिदानंदचैतनहैअविकलपनिरंजनलोक
पती । ध्रुवआदिअनंतअनादिकहैअविनाशअखंडअनूपगती । असरीरअनिंद्रयप्रा
णनहीमहिमाश्रुतिवाकविखेवरती । प्रणमोपरमेश्वरसिद्धसदाचितमोचितमीसमता
सुमती ॥ ३८० ॥ जगदीश्वरलोकअधारप्रभूजगमस्तकउत्तमऊचवसै । सभकेसिर
ऊपरलोकशिपाजिममंदरऊपरकेतूलसे । सरवग्यलपैनिरपेतिनकोछदमस्तसुध्याव
नसांतरसै । प्रणमोपरमातमजोतमईजिहकेसिमरेअघपुंजनसै ॥३८१॥ कमलवंध
दूमलवंदयुगम अनुघंअरुजंअमितंअतुलंअकुलंकयसंअस्थंतपदं । अजअव्यथिरंअ
नकंपतकंअछिदं अजयंअभयंसुपदं अलपंअभुजंतुचराचरलंघअनूपमसंरमणंजयदं
प्रणमोअमरंसभतेअघकंप्रभुसिधपयंसभमंगलदं ॥३८२॥ परमेश्वरहोपरमातमहोप
रमोतमहोपरमोचकहो। परमामहिमापरमागममै परवीनारिदेपरतीतहो । परचर्ज
तहोशिवस सत । अजरामरहोतयसर्वगहो । ऽ रनागगुमानचभव्यनमे प्रणमोशि

नन । जसधरणाम
श्रवगण हरभवज
परण सभभपटरण
य करण ॥ ३८४ ॥
तु ॥ सवैया ॥ ३२ ॥
ति अमितधर गु
वचतन सुकविविवि

परमहरपउरचिकसतहग

सिंधतरैलहिमाँखगई ॥ ३७९ ॥ चिनरूपाचिदानंदचैतनहैअविकलपानिरंजनलोक
पती । ध्रुवआदिअनंतअनादिकहैअविनाशअखंडअनूपगती । असरीरअनिंद्रयप्रा
णनहीमहिमाश्रुतिवाकविखेवरती । प्रणमोपरमेश्वरसिद्धसदाचितमोचितमीसमता
सुमती ॥ ३८० ॥ जगदीश्वरलोकअधारप्रभूजगमस्तकउत्तमऊचवसै । सभकेसिर
ऊपरलोकशिपाजिममंदरऊपरकेतूलसे । सरवग्यलपैनिरपेतिनकोछदमस्तसुध्याव
नसांतरसै । प्रणमोपरमातमजोतमईजिहकेसिमरेअघपुंजनसै ॥३८१॥ कमलवंध
द्रूमलवंदयुगम अनुघंअरुजंआमितंअतुलंअकुलंकयसंअस्थंतपदं । अजअव्याधिरंअ
नकंपतकंअछिदं अजयंअभयंसुपदं अलपंअभुजंतुचराचरलंघअनूपमसंरमणंजयदं
प्रणमोअमरंसभतेअधकंप्रभुसिधपयंसभमंगलदं ॥३८२॥ परमेश्वरहोपरमातमहोप
रमोतमहोपरमोचकहो। परमामहिमापरमागममै परवोनारिदेपरतीततहो । परवर्ज
होशिवस सत । अजरामरहोतयसर्वगहो । सुरनागनुमानवमंडलमैं प्रणमोशि

लअपयचर अनघ
अकथमन थकन
नगण गणधरवर
मणसत घटसदन
लतरण तससरण
जयजय परम अभ
कमल वंधसवल
सुमनसुपतवर सुम
घरसुकृतकरसुचमन

प्रणमी शिव वसुधा बित रवीनहि रतीततहो प्रत्र जै रमेश्वरहो प शिवसा सत रमातमहो अजरा मर रमोतमहो नवस रमोचकहो गंग

अलपजस अगम
अमर नरसरपसग
नन । जसधरणस
अघगण हरभवज
परण सभभयटरण
य करण ॥ ३८४ ॥
घु ॥ सवैया ॥ ३२ ॥
ति अमितधर सु
वचतन सुकविविवि

धिविधसुजसकरणरति सुविरचपदवरसुजसकथनगन परमहरपउरविकसतहग